शासकीय महाविद्यालय ढोढ़र,
जिला-श्योपुर (म.प्र.)

ISBN NO.- 978-93-341-1941-1

शोध स्मारिका

"व्यक्तिव विकास एवं चरित्र निर्माण "

संपादक-
प्रो.घनश्याम चौधरी | डॉ. बकील सिंह कौशल

प्रायोजक
उच्च शिक्षा विभाग, मध्यप्रदेश शासन, भोपाल

मुख्य संरक्षक

डॉ. कुमार रत्नम

अतिरिक्त संचालक उच्च शिक्षा
ग्वालियर-चम्बल संभाग, ग्वालियर (म.प्र)

संरक्षक

डॉ. बिपिन बिहारी शर्मा

प्राचार्य PMCOE
शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, श्योपुर

प्राचार्य

प्रो. रामपति रावत

संयोजक

प्रो.घनश्याम चौधरी

मुख्य वक्तागण

डॉ. विद्याराम शर्मा

(सहायक प्राध्यापक)
समाजशास्त्र विभाग जी. बी. पंत
स्नातकोतर महाविद्यालय, कछला, बदायूँ, उत्तर प्रदेश

मुख्य वक्तागण

डॉ. पारुल परिहार

(सहायक प्राध्यापक)
जैव प्रोद्योगिकी विभाग
वनस्थली विद्यापीठ, निवाई, राजस्थान

शोध पत्र के उप विषय

- व्यक्तित्व विकास में संचार कौशल
- व्यक्तिव विकास एवं रोजगार सृजन
- साहित्य का व्यक्तित्व विकास में योगदान
- भारतीय संस्कृति एवं चरित्र निर्माण
- व्यक्तित्व विकास में प्रोद्योगिकी का महत्त्व
- विद्यार्थियों के लिए चरित्र निर्माण का महत्त्व
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का चरित्र निर्माण में योगदान
- विषय से सम्बंधित अन्य उप विषय

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal - Equivalent to UGC Approved Journal ISSN No. 2456-6713

IEARJ
International Educational Applied Research Journal

9 789334 119411

राष्ट्रीय वेबीनार

व्यक्तित्व विकास एवं चरित्र निर्माण

दिनांक 22/8/2024

शासकीय महाविद्यालय ढोढ़र, जिला श्योपुर (म.प्र.)

संयोजक

प्रो. घनश्याम चौधरी

सचिव

डॉ. बकील सिंह कौशल

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal - Equivalent to UGC Approved Journal ISSN No. 2456-6713

IEARJ
International Educational Applied Research Journal

मुख्य संरक्षक

डॉ. कुमार रत्नम

अतिरिक्त संचालक उच्च शिक्षा ग्वालियर चम्बल संभाग, ग्वालियर, मध्य प्रदेश

संरक्षक

डॉ. बिपिन बिहारी शर्मा

प्राचार्य PMCOE शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, श्योपुर

प्राचार्य

प्रो. रामपति रावत

शासकीय महाविद्यालय ढोढ़र, जिला श्योपुर

संयोजक

प्रो. घनश्याम चौधरी

मुख्य वक्ता

डॉ. विद्याराम शर्मा

(सहायक प्राध्यापक) समाजशास्त्र विभाग

जी. बी. पंत स्नातकोतर महाविद्यालय, कछला, बदायूँ, उत्तर प्रदेश

मुख्य वक्ता

डॉ. पारुल परिहार

(सहायक प्राध्यापक) जैव प्रोद्योगिकी विभाग

वनस्थली विद्यापीठ, निवाई, राजस्थान

प्रायोजक

उच्च शिक्षा विभाग, म.प्र. शासन, भोपाल

आयोजक

शासकीय महाविद्यालय ढोढर, जिला श्योपुर मध्य प्रदेश

डॉ. के. रत्नम्
अतिरिक्त संचालक
म.प्र. उच्च शिक्षा विभाग
ग्वालियर-चम्बल संभाग, ग्वालियर

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर बहुत ख़ुशी हो रही है शासकीय महाविद्यालय, ढोढ़र द्वारा विषय "व्यक्तिव विकास एवं चरित्र निर्माण " पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। यह सराहना करने योग्य है कि राज्य और देश के कई युवा शोधार्थी सम्मेलन में भाग लेंगे। मुझे आशा है, कि राष्ट्रीय संगोष्ठी के परिणाम निश्चित रूप से सभी प्रतिभागियों को "व्यक्तिव विकास एवं चरित्र निर्माण " के बारे में आवश्यक दिशा -निर्देश और व्यवहारिक अनुसंशा प्रदान करेंगे।

मैं आयोजकों को बधाई देता हूँ, और संगोष्ठी की शानदार सफलता के लिए शुभकामनाएँ देता हूँ।

शुभकामना संदेश

डॉ. बिपिन बिहारी शर्मा
प्राचार्य
PMCOE शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, श्योपुर

यह अत्यंत प्रसन्न्ता का विषय है, कि शासकीय महाविद्यालय, ढोढ़र द्वारा विषय "व्यक्तिव विकास एवं चरित्र निर्माण " पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबीनार का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर को स्मरणीय बनाने के लिए ई-प्रोसीडिंग भी प्रकाशित की जा रही है । जिसमें शोध पत्र एवं आलेखों को सम्मिलित किया जाएगा। इस राष्ट्रीय वेबीनार में देश व प्रदेश के कई विद्वान, विषय विशेषज्ञ भाग लेंगे एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ऑनलाईन शिक्षा की प्रभावशिलता, आवश्यकता एवं वर्तमान समय में इस विषय की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला जाएगा।

मुझे पुर्ण विश्वास है, कि इस वेबीनार से युवा विद्यार्थी लाभंवित होंगे एवं अपने कार्यक्षेत्र में सफल होंगे । में राष्ट्रीय वेबीनार और ई-प्रोसीडिंग के प्रकाशन के लिए शासकीय महाविद्यालय, ढोढर को अपनी अग्रिम शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

INDEX

Name of Author	Tittle of Paper	Page No.
प्रो. घनश्याम चौधरी	आत्मवलोकन द्वारा विद्यार्थियों में चरित्र निर्माण एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	01-03
NARAYAN PRATAP SINGH	व्यक्तित्व विकास के विभिन्न आयाम	04-08
डॉ. रमेश प्रसाद कोल	शिक्षा के वैयक्तिक तथा सामाजिक उद्देश्य	09-11
MR. RAMPATI RAWAT	The Gurukula Education Develop to personality develop	12-15
AARTI CHOUDHARY	Personality Development Through Yoga	16-19
श्री रामपति रावत	सोशल मीडिया का व्यक्तित्व विकास में योगदान	20-22
अजीत सिंह लोकेन्द्र सिंह जाट	व्यक्तित्व विकास और नई शिक्षानीति (एनईपी) 2020 में इस की भूमिका	23-24
VIKASH JAT GUMAN SINGH	Personality Development and Its Role in the New EducationPolicy (NEP) 2020	25-27

"आत्मवलोकन द्वारा विद्यार्थियों में चरित्र निर्माण एक विश्लेषणात्मक अध्ययन"

शोध पत्र लेखक

प्रो. घनश्याम चौधरी

सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
शासकीय महाविद्यालय ढोढ़र, श्योपुर

सारांश -

शिक्षा किसी भी समाज और राष्ट्र की रीढ़ होती है जिसके आधार पर उस समाज और राष्ट्र का चहुमुखी विकास को आधार प्राप्त होता है। चरित्र का मनुष्य जीवन में बड़ा महत्व है। सच्चरित्रता से मनुष्य को अनेक लाभ मिलते हैं। चारित्रिक विकास में सत्य, उदारता, विनम्रता, सुशीलता, सहानुभूति आदि अनेक मूल्य समाहित होते हैं। आत्मवलोकन से तात्पर्य किसी व्यक्ति के व्यवहार और प्रगति पर डेटा एकत्र करने की विधि से है जिसमें व्यक्ति से उसके प्राकृतिक वातावरण में उसके स्वयं के कार्यों और अनुभवों का रिकार्ड करवाया जाता है। विद्यार्थी शिक्षक के मार्गदर्शन में आत्मावलोकन के अभ्यास द्वारा अपनी भावनात्मक, बौद्धिक और शारीरिक क्षमता का पता लगा सकते हैं। वे स्वयं की क्षमता, त्रुटियों और कमजोरियों को खोज कर उन्हें विकसित व दूर कर सकते हैं। आत्मावलोकन की अनेक विशेषताएँ हैं, जिनके द्वारा विद्यार्थी चरित्र विकास के संदर्भ में लाभान्वित हो सकते हैं। शिक्षक यदि स्वयं को क्षमतावान बनाकर विद्यार्थियों को आत्मावलोकन का अभ्यास चरणबद्ध साधनों से करवाये तो निश्चित ही आत्मावलोकन के अभ्यास के माध्यम से विद्यार्थी स्वयं की क्षमताओं को पहचानकर उन्हें विकसित कर सकेंगे तथा कमजोरियों-त्रुटियों को दूर कर सकेंगे। इससे स्वयं ही उनका चारित्रिक विकास होगा, यही हमारी नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का लक्ष्य भी है।

बीज शब्द :- आत्मावलोकन, अभ्यास, चारित्रिक, विकास, व्यक्तित्व "आत्मवलोकन द्वारा विद्यार्थियों में चरित्र निर्माण एक विश्लेषणात्मक अध्ययन"

परिचय :-

विद्यार्थियों में चरित्र निर्माण की जिम्मेदारी प्रायः शिक्षकों की मानी जाती है, परिवार में ये जिम्मेदारी पालकों और परिवार के बुजुर्गों की मानी जाती है। आत्मावलोकन के अभ्यास द्वारा ही विद्यार्थी या कोई भी व्यक्ति वास्तविक रूप से अपनी क्षमताओं व कमजोरियों को जान सकता है, समझ सकता है। अगर शिक्षक या कोई अन्य व्यक्ति विद्यार्थी का मूल्यांकन या चरित्र का आकलन कर रहा है तो यह विचार प्रकट कर रहा है तो वह विद्यार्थी के बारे में अनेक लक्ष्यों से अनभिज्ञ हो सकता है। अतः आत्मावलोकन द्वारा ही विद्यार्थी स्वयं की क्षमताओं और कमजोरियों को जानकर पहचानकर अपने चरित्र का स्वयं निर्माण कर सकता है।

प्रस्तुत शोध पत्र में आत्मावलोकन को एक अभ्यास के रूप में दर्शाकर उसकी अवधारणा स्पष्ट की गई है। यह भी स्पष्ट किया गया है कि स्वयं की क्षमता की खोज कैसे की जाये ? इससे क्या लाभ विद्यार्थियों को प्राप्त होते हैं? इसका भी विवेचन किया गया है। इसके अतिरिक्त स्वयं की कमजोरियों को जानने-पहचानने सम्बन्धी क्षेत्रों का भी वर्णन किया गया है। इस परिप्रेक्ष्य में आत्मावलोकन के साधनों को भी चरणबद्ध रूप से प्रस्तुत किया गया है। यहाँ यह भी स्पष्टता की गई है कि आत्मावलोकन का उद्देश्य विद्यार्थी द्वारा स्वयं की क्षमताओं और कमजोरियों को जानना है, जिसके द्वारा क्षमताओं को विस्तारित किया जा सके तथा कमजोरियों को दूर किया जा सके।

'आत्मावलोकन' की अवधारणा का सम्बन्ध प्राचीनकाल में ही मानव समाज से रहा है। हमारे धर्मशास्त्रों में कहा गया है ₹आध्यामि प्रतिकूलानि परेषाम न समाचरेत।₹ इस प्रकार की स्थिति आत्मावलोकन द्वारा ही उत्पन्न होती है। सामान्य रूप से एक विद्यार्थी को सदैव अपने दिन भर के कार्यों की समीक्षा स्वयं करनी चाहिये तथा विचार करना चाहिये कि उसने पूरे दिन में कौन-कौन से अच्छे कार्य किये तथा कौन-कौन से गलत कार्य किये ? इसके बाद गलत कार्यों को पुनः न करने की प्रक्रिया को अपनाने का प्रयास करना चाहिये। इससे विद्यार्थी के मन में एक आत्मसंतोष की भावना उत्पन्न होती है। चारित्रिक विकास स्वंय ही होने लगता है। आत्मावलोकन के अभ्यास की प्रक्रिया को विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न कथनों में स्पष्ट किया है, कुछ चयनित कथन प्रस्तुत हैं :-

1.) प्रो. एस.के. दुबे :- "आत्मावलोकन एक आदर्शवादी विचार-प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अपने कार्यों, व्यवहार एवं उद्देश्यों की समीक्षा, तर्क, चिंतन एवं आत्मा की आवाज पर करता है। इसमें एक ओर वह अपनी क्षमताओं को निखारने का प्रयास करता है तो दूसरी ओर त्रुटियों को दूर करने का प्रयास करता है, जिससे उसका कार्य एवं व्यवहार समाजोपयोगी, आदर्शवादी एवं नैतिकता के पूर्ण समीप होता है।"

2) डॉ. ए. बशैलिया :- "आत्मावलोकन एक मानसिक विचार प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने कार्य एवं व्यवहार में अपेक्षित सुधार लाने के लिये स्वमूल्यांकन की प्रक्रिया को अपनाता है। इसमें यह अन्य विद्वानों के विचारों एवं स्वयं की आत्मा का प्रयोग प्रमाण के रूप में करता है। इस आधार पर ही वह अपनी क्षमता का निखार एवं सुधार सम्भव करता है।"

3) श्रमती आर.के. शर्मा - "आत्मावलोकन दार्शनिक विचार प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति अपने कार्य एवं व्यवहार को समाजोपयोगी, मानव के विकास एवं आत्मोत्थान के लिये उपयोग बनाता है। इसमें वह अपनी कार्यक्षमता को दूसरों के एवं स्वयं के विकास के हेतु प्रयोग करता है तथा व्यवहारगत त्रुटियों का परिमार्जन करता है।"

उपरोक्त विद्वानों के कथनानुसार स्पष्ट होता है कि आत्मावलोकन का सम्बन्ध उदारता, मानवता, नैतिकता, आत्मोत्थान क्षमताओं के विकास एवं त्रुटियों के सुधार से होता है। इसमें व्यक्ति स्वमूल्यांकन प्रक्रिया को अपनाता है और यह विद्यार्थी के संदर्भ में उसके चरित्र निर्माण में सहायक होता है।

आत्मावलोकन अभ्यास की विशेषताएँ:-

आत्मावलोकन का अभ्यास एक कठिन प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया जाता है क्योंकि जब तक विद्यार्थी इसका अभ्यास नहीं करता तब तक वह सही अर्थों में आत्मावलोकन नहीं कर सकता है। आत्मावलोकन की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख निम्नांकित हैं :-

1) आत्मावलोकन एक आदर्शवादी प्रक्रिया के रूप में जाना जाता है।
2) आत्मावलोकन एक मानसिक प्रक्रिया है क्योंकि इसमें विद्यार्थी अपने मनन एवं चिंतन के आधार पर विविध प्रकार के विश्लेषण व संश्लेषण कर स्वयं के बारे में एक निष्कर्ष पर पहुँचता है।
3) आत्मावलोकन अभ्यास एक शैक्षिक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से वह स्वयं सीखता है और दूसरों को सीखने का प्रयास करता है।
4) आत्मावलोकन अभ्यास एक सामाजिक प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया जाता है, जब विद्यार्थी आत्मावलोकन करता है तो वह अपने व्यवहार को सर्वोत्तम बनाने का प्रयास करता है। व्यवहारगत त्रुटियों, कमियों को दूर करने का प्रयास करता है। इससे उसका व्यवहार अनुकरणीय व आदर्शयुक्त होता है। अतः सामाजिक सर्वांगीण विकास की व्यवस्था का प्रमुख आधार आत्मवलोकन है।
5) आत्मावलोकन अभ्यास एक सार्वजनिक हित के प्रक्रिया भी है।
6) आत्मावलोकन अभ्यास विद्यार्थी की स्वमूल्यांकन प्रक्रिया है।
7) यह एक दार्शनिक प्रक्रिया भी है क्योंकि इसके अन्तर्गत अनेक प्रकार की दार्शनिक विचारधाराओं का उपयोग किया जाता है।
8) आत्मावलोकन एक व्यवहारिक प्रक्रिया भी है। आत्मावलोकन में विद्यार्थियों पर सिखाया जाता है कि उसको वही व्यवहार करना है जो कि उसको स्वयं को अच्छा लगता है।
9) यह सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया भी है।
10) यह सुधार की प्रक्रिया के रूप में भी जाना जाता है।

आत्मावलोकन द्वारा विद्यार्थी स्वयं की क्षमताओं की खोज करता है। यह एक महत्वपूर्ण विषय है। आज विद्यार्थी में निहित क्षमताओं की खोज पालन एवं शिक्षकों द्वारा की जाती है। यदि विद्यार्थियों का चारित्रिक विकास करना है तो शिक्षक को भी विद्यार्थियों की क्षमताओं की खोज ईमानदारी व विभिन्न शिक्षण विधियों, पाठ्यक्रमों, सहगामी क्रियाओं तथा गतिविधियों के माध्यम से करना चाहिये। इस हेतु शिक्षक को सर्वोत्तम शिक्षण अधिगम विधि, सर्वोत्तम मूल्यांकन, स्वय मे गुणवत्ता, स्वय की कमजोरियों में सुधार, शिक्षण विधियों में सुधार, सर्वोत्तम अनुशासन, सृजनशीलता का विकास, स्वयं के ज्ञानात्मक एवं क्रियात्मक क्षेत्र में विकास संवेगात्मक स्थिरता में विकास, जीवनपयोगी कौशलों का विकास आदि पर विशेष ध्यान देना होगा।

आत्मावलोकन के अभ्यास की प्रक्रिया को भी शिक्षकों को अपने विद्यार्थियों को बतलाना और सिखाना होगा। इस प्रक्रिया को सम्पन्न करने के लिये अनेक महत्वपूर्ण साधन होते हैं, जिनका अभ्यास किया जाता है। ये सभी साधन भिन्न-भिन्न रूप में आत्मावलोकन अभ्यास में सहायता करते हैं। आत्मावलोकन के प्रमुख सोपानबद्ध रूपी साधन निम्नांकित हैं, जो कि विद्यार्थियों के उत्तम चरित्र निर्माण में सहायक होते हैं:-

1) चिंतन 2) विश्लेषण 3) संश्लेषण 4) प्रयोग 5) अनुसंधान 6) मूल्यांकन 7) तर्क 8) समीक्षा 9) प्रमाणीकरण
10) दार्शनिक विचार 11) स्वतंत्रता आदि।

निष्कर्ष :-

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बहुआयामी एवं कौशल आधारित व्यवहारिक शिक्षा के दृष्टिकोण से व्यक्तित्व विकास एवं चरित्र निर्माण पर भी बल दिया गया है। जीवन मूल्यों में व्यक्तित्व एवं चरित्र का स्थान ही सर्वोपरि होता है। चरित्र हमारे व्यवहार और कार्यों में स्पष्ट तौर पर दिखाई देता है। विशेषतौर पर नई शिक्षा नीति 2020 में विद्यार्थियों के चारित्रिक विकास पर जो बल दिया गया है, उसको विद्यार्थियो में शिक्षक यदि आत्मावलोकन का अभ्यास कराये ताकि विद्यार्थी स्वंय की क्षमताओं, त्रुटियों एवं कमियों का आकलन-मूल्यांकन कर सके तो वह अपने चरित्र का विकास कर सकता है। आज पश्चिम से प्रभावित जीवन शैली, तकनकी के दायरे में सिमटता आजका विद्यार्थी, समाज, वास्तविक जीवन के बजाय काल्पनिक जीवन और इंटरनेट, मीडिया का बढ़ता हुआ वर्चस्व, शारीरिक और श्रमपरक खेलकूद की जगह गैजेट गेम्स में उलझते विद्यार्थी जीवन, बढ़ते एकाकीपन, संयुक्त परिवार का विघटन आदि

ने देश वे विद्यार्थियों में चरित्र को खोखला करना शुरू कर दिया है। विद्यार्थियों के असंतुलित व व्यक्तित्व जो कि देश, परिवार, समाज के लिये घातक और खतरनाक है, इस हेतु उनका चारित्रिक विकास आवश्यक है।

प्रस्तुत शोध पत्र में आत्मावलोकन जो कि हमारे भारत की आत्ममंथ की प्राचीन तकनीक है उसके अभ्यास द्वारा शिक्षक विद्यार्थियों को चरणबद्ध साधनों द्वारा स्वयं की क्षमता और कमजोरियों को जानने व समझने योग्य बना देते हैं।

आत्मावलोकन की प्रक्रिया स्वतंत्र विचारों की स्थिति में ही सम्पन्न होती है। जब तक विद्यार्थी स्वंय के बारे में चिंतन, अपने व्यवहार का विश्लेषण, संश्लेषण नही करेगा, तब तक वह स्वयं की क्षमता विस्तारित करने हेतु मूल्यांकन-समीक्षा नहीं करेगा। शिक्षक के मार्गदर्शन में विधार्थी आत्मावलोकन द्वारा चरित्र का विकास करने में स्वयं ही सामर्थ्यवान बन पायेंगे। तभी नई शिक्षा नीति 2020 के लक्ष्य प्राप्त होंगे।

संदर्भ :-

1) https://Asmuraani.ac.in on dated 5.9.24 at 10.35 PM
2) दुबे एस.के. एवं शर्मा, एच.एस., स्वयं की पहचान, राधा प्रकाशन मन्दिर, (प्रा), लि., आगरा, पृ.सं.-9
3) https://www.jagran.com आत्मावलोकन करे खुद की पहचान, on dated 5.9.24 at 11.11 PM

व्यक्तित्व विकास के विभिन्न आयाम

NARAYAN PRATAP SINGH
Assistand professor- Sociology
Govt.Nowrozabad College Umariya (M.P.)

सारांश -

किसी व्यक्ति का व्यक्तित्व उसके संपूर्ण व्यवहार का दर्पण है। व्यक्तित्व विकास का अर्थ व्यक्ति के बाह्य स्वरूप एवं आंतरिक गुणों का योग होता है। जिसका विकास प्रत्येक व्यक्ति में भिन्न-भिन्न होता है। व्यक्तित्व विकास अनुवांशिकता, शारीरिक गठन एवं स्वास्थ्य, सामाजिक निर्धारकों जिसमें माता-पिता, शिक्षा पद्धति, शिक्षक, समाज का वातावरण आदि पर निर्भर करता है। इसी के कारण प्रत्येक व्यक्ति में प्रवृत्तियों के संयम, आत्म निर्णय, भय पर नियंत्रण, परिस्थितियों के अनुसार मानसिक प्रतिक्रियाओं में अंतर होता है। व्यक्तित्व के तत्व शारीरिक, मानसिक, नैतिक, सामाजिक और संवेदात्मक आदि हैं। व्यक्तित्व के विकास से व्यक्ति को समाज के साथ-साथ आसपास के लोगों से मान्यता और स्वीकृति प्राप्त करने में मदद मिलती है। शक्तिशाली व्यक्तित्व वाले व्यक्ति संतुलित स्वभाव वाले होते हैं। व्यक्तित्व विकास के लिए आवश्यक तत्व लक्ष्य निर्धारण, तनाव प्रबंधन, समय प्रबंधन, तकनीकी विकास, संचार कौशल, प्रभावी लेखन, शिष्टाचार, स्वॉट विश्लेषण, हार्ड स्किल्स और सॉफ्ट स्किल्स आदि हैं। व्यक्तित्व का विकास संभव है जिसे व्यक्ति समय प्रबंधन, लक्ष्य निर्धारण, स्वॉट एनालिसिस, नकारात्मक विचारों पर नियंत्रण के माध्यम से प्राप्त कर सकता है। व्यक्तित्व विकास के माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन में सफलता प्राप्त कर सकता है अवसाद पर नियंत्रण रख सकता है, तनाव प्रबंधन कर सकता है, संचार कौशल का विकास कर सकता है, सॉफ्ट स्किल के साथ हार्ड स्किल्स के माध्यम से अपने व्यक्तित्व को संपूर्णता की ओर ले जा सकता है।

प्रस्तावना -

प्रचलित धारणा के अनुसार॰ व्यक्तित्व ॰शब्द का किसी व्यक्ति के सामाजिक उद्दीपक मूल्य के सूचक के रूप में प्रयोग किया जाता है। इससे तात्पर्य उस संपूर्ण प्रभाव से है जो एक व्यक्ति दूसरों पर डालता है, अर्थात् व्यक्ति उस प्रत्येक स्त्री पुरुष के लिये जिसके संपर्क में वह आता है एक उद्दीपक के रूप में कार्य करता है। किसी व्यक्ति के सामाजिक उद्दीपक मूल्य के अंतर्गत उसकी दैहिक विशेषताएँ) जैसे उसकी ऊँचाई, शरीरभार, वर्ण, वेशभूषा इत्यादि , उसकी विशिष्ट व्यवहारपद्धतियाँ) जैसे उसकी निजी आदतें और व्यवहारवैचित्र्य (और तात्कालिक परिवेश के प्रति प्रतिक्रिया करने के उसके अपने विशिष्ट ढंग, आदि आते हैं।

उद्दीपक के रूप में क्रियाशील रहते हुए व्यक्ति पर उन पारस्परिक क्रियाओं का भी सतत प्रभाव रहता है जिनका वह अपने तथा अन्य व्यक्तियों के बीच उपक्रमण करता है। ये परिणामात्मक शक्तियाँ ऐसे परिवर्तन उत्पन्न करती हैं जो उसके अपने, अन्य व्यक्तियों और स्थितियों के प्रत्यक्षीकरण को प्रभावित करते हैं। दूसरे शब्दों में, व्यक्ति अपने को अंदर से देखता है और संगठन, अर्थात एकता और स्थिरता उत्पन्न करके अपने आंतर वैयक्तिक स्वभाव में अपनी आत्मधारणा का विकास करता है। आंतरवैयक्तिकता की दृष्टि से देखने पर व्यक्तित्व को सामान्यतया॰ आत्मा ॰अथवा॰ अहं ॰कहते हैं। इसके अंतर्गत व्यक्ति की बौद्धिक, संवेगात्मक संरचनाएँ, उनकी योग्यताएँ और अभिवृत्तियाँ, रुचियाँ, पसंदगी और नापसंदगी आती हैं। यह द्रष्टव्य है कि चेतनात्मक के अतिरिक्त व्यक्ति के आंतर वैयाक्तिक संगठन में कभी कभी ऐसे अचेतन तत्वों का भी समावेश होता है। जिनसे वह स्वयं अवगत नहीं होता।

व्यक्तित्व मापन -

व्यक्तित्व के सामाजिक और आंतर वैयक्तिक दोनों पक्षों पर मापन योग्य तथा बोधगम्य होने के रूप में अनेक विधियाँ प्रस्तावित की गई हैं। फिर भी, इनमें से प्रत्येक विधि के कुछ गुण और कुछ दोष हैं। प्रमुख शीर्षक, जिनके अंतर्गत इन विधियों को सूचीबद्ध किया जा सकता है, इस प्रकार हैः

(1) सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के अध्ययन,
(2) दैहिक वृत्त;
(3) सामाजिक वृत्त,
(4) व्यक्तिगत वृत्त;
(5) अभिव्यंजनात्मक गतियाँ,
(6) योग्यताक्रम निर्धारण,
(7) मानसिक परीक्षण;
(8) लघु जीवन स्थितियाँ,
(9) सांख्यिकीय विश्लेषण,
(10) प्रयोगशाला के प्रयोग;

(11) प्रागुक्ति;
(12) गहन विश्लेषण;
(13) आदर्श प्रकार और
(14) संश्लिष्ट विधियाँ।

इन विधियों का अनेक अन्य तकनीकों के रूप में उपविभाजन किया गया है जिसकी उपयोगिता विश्वसनीयता तथा वैधता की समस्या उत्पन्न कर देती है क्योंकि सामान्य मूल्यांकन पद्धतियों को विश्वसनीय तथा परिशुद्ध होना चाहिए।

व्यक्तित्व मूल्यांकन और अनुसंधान संबंधी कैलिफोर्निया इंस्टीट्यूट ने संयुक्त राज्य अमरीका में व्यक्तित्व के मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के प्रयोग की समालोचना करने के पश्चात् 62 मानसिक परीक्षणों का उल्लेख किया गया है जिनमें से कुछ की चर्चा नीचे की जा रही है।

दस प्रमुख परीक्षणों में से पाँच बुद्धिपरीक्षण हैं और चार प्रक्षेपीय परीक्षण। दसवें परीक्षण का नाम मिनेसोटा मल्टीफेजिक व्यक्तित्व इन्वेन्ट्री है। यह एक मनोमितिक तकनीक है जिसका प्रयोग व्यक्तित्व के नैदानिक प्रकारों का वर्णन अर्थात् विभिन्न मनोविकारात्मक श्रेणियों के अंतर्गत रोगियों का निदान करने के लिये किया जाता है। प्रक्षेपीय परीक्षणों का प्रयोग व्यक्तित्व की गहन अभिव्यक्तियों अर्थात् किसी व्यक्ति में अंतर्निहित उन व्यक्तिगत और प्रकृति वैशिष्ट्यजन्य अर्थों तथा संगठनों की, जो अन्य किसी प्रकार से प्रकट नहीं होते, जानकारी प्राप्त करने के लिये किया जाता है। रौर्शा परीक्षण एक प्रक्षेपीय तकनीक है जो रोशनाई के धब्बों के विवेचन पर आधारित है। यह मनोरंजक है कि रॉर्शा परीक्षण का प्रयोग करनेवाले स्थानों तथा व्यवहार परिमाण दोनों ही दृष्टियों से रॉर्शा अपने अन्य प्रतिद्वंद्वियों से स्पष्ट आगे है। बुद्धिपरीक्षण का उद्देश्य व्यक्ति की उन योग्यताओं का चित्रण करना होता है जो संपूर्ण परिवेश अथवा उसके विभिन्न पक्षों के प्रति उसके अभियोजन को संभव बनाती हैं।

बुद्धि (सामान्य मानसिक योग्यता) -

व्यक्तित्व के संघटकों की गणना करते समय अनेक मनोवैज्ञानिक बुद्धि को प्रमुख स्थान देते हैं। ऐसी समस्या के उपस्थित होने पर, जिसका समाधान कई तरह से हो सकता है, व्यक्ति अपनी बुद्धि का जिस प्रकार प्रयोग करता है वह उसके व्यक्तित्व गठन को प्रतिबिंबित करता है।

स्पीयरमैन का सदैव यही मत रहा है कि बुद्धि एक सामान्य मानसिक योग्यता है। उनका विश्वास था कि समस्त बौद्धिक कार्यों में एक आधारभूत क्रिया अथवा क्रियासमूह समान रूप से वर्तमान होता है और यह कि बुद्धि अनिवार्यत : एक तर्कनापरक चिंतन है। यह एक प्रकार के सामान्यऱ शक्ति ऱतत्व के समान होता है जो बुद्धि को अपनी सामान्य शक्ति का व्यवहार करने में सक्षम बनाता है। फिर भी इन्होंने कुछ विशेष अमूर्त कुशलताओं अथवाऱ द्म ऱतत्वों को भी स्वीकार किया है, यद्यपि वे बाह्य और सीमित रूप से) सामान्य (तत्व से ही अंश ग्रहण करते हैं।

स्पीयरमैन के इस सामान्य तत्वसिद्धांत के विरुद्ध बुद्धि के एक बहुतत्त्व सिद्धांत का प्रतिपादन किया गया। इस सिद्धांत के प्रमुख प्रवर्तक, केली का कथन है किऱ क्र ऱकोई एकमात्र वस्तु नहीं है, जैसा उसे कहा जाता है, वरन् इस तत्त्व के अंतर्गत समान योग्यताओं के विशेष समूह होते हैं। उदाहरण के लिये, अपने अमूर्त क्षेत्र के अंतर्गत, बुद्धि समाकलित विशेष पक्षों, जैसे स्मृति, स्थानगत संबंध, शाब्दिक और आंकिक समझ, समझ की गति इत्यादि, का संमिश्रण हो सकती है। यह द्रष्टव्य है कि बाद के मनोवैज्ञानिकों ने भी इसी के समान प्रस्तावों के आधार पर इस परिकल्पना को सिद्ध किया है।

बुद्धि के अंतर्गत, जैसा इसे अधिकांश मनोवैज्ञानिकों ने समझा है, वे सब योग्यताएँ आ जाती हैं, जिनके द्वारा ज्ञान का अर्जन, धारण तथा किसी समस्या के समाधान में व्यवहार किया जाता है। यह प्रत्यक्षीकरण, अधिगम, स्मृति, कल्पना इत्यादि योग्यताओं को भी उपनय करती है। किंतु यत : विभिन्न प्रकार की योग्यताओं का ठीक ठीक निर्धारण निश्चित रूप से कठिन है, अत: बुद्धि की किसी भी परिभाषा का इतना अधिक विस्तृत होना अनिवार्य है कि उसका बहुत व्यावहारिक महत्व नहीं रह जाता। फिर भी, मनोवैज्ञानिकों ने कम से कम तीन प्रकार की मापनपद्धति का विकास किया है। अमूर्त बुद्धि की आवश्यकता वृत्तिक व्यक्तियों, जैसे वकीलों, चिकित्सकों, साहित्यिक व्यक्तियों और व्यवसायियों, राजमर्मज्ञों, तथा इसी प्रकार के लोगों की होती है। अभियंता, कुशल मैकेनिक, प्रशिक्षित औद्योगिक कर्मचारी, नक्शानवीस, इत्यादि सब को यांत्रिक दृष्टि से, तथा राजनयज्ञ, विक्रेता, उपदेशक और परामर्शदाता को सामाजिक दृष्टि से बुद्धिसंपन्न होना आवश्यक है।

अमूर्त बुद्धि प्रतीकों के संबंधों को समझने से तथा उनके सार्थक व्यवहार से संबद्ध होती है। इन अमूर्त योग्यताओं के मापन के लिये निर्मित परीक्षणों को साधारणतयाऱ सामान्य बुद्धि परीक्षण ऱकहते हैं। इन परीक्षणों को प्रयुक्त सामग्री और आवश्यक प्रतिक्रियाओं की दृष्टि से दो श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है--शाब्दिक बुद्धि परीक्षण तथा अशाब्दिक बुद्धिपरीक्षण। व्यक्ति की बुद्धि का निर्णय उस सूचकांक के आधार पर किया जाता है जो वह) शब्द रूप में प्रस्तुत (किसी समस्या के समाधान में अपनी शाब्दिक योग्यता, पठन और लेखन, के प्रयोग में प्राप्त करता है। अशाब्दिक परीक्षण प्रहेलिकाओं, भूलभुलैयों, चित्रों और रेखाचित्रों, के रूप में किसी समस्या को उपस्थित करते हैं और परीक्ष्य व्यक्ति को साधारण चिन्हों द्वारा अथवा जोड़ तोड़कर अपना समाधान प्रस्तुत करना पड़ता है।

यांत्रिक बुद्धि से सामान्यत:, भाषागत प्रतीकों की अपेक्षा, स्वयं मूर्त वस्तुओं के साथ कार्य करने की औसत से अधिक क्षमता का तात्पर्य होता है। हस्तकौशल तथा गत्यात्मक समन्वय की क्षमता से युक्त व्यक्ति यांत्रिक साधनों को जोड़ने तोड़ने में प्रवीण होते हैं। यांत्रिक अभियोग्यता परीक्षण उन्हें कहते हैं जो इस प्रकार की बुद्धि का मूल्यांकन करने के लिये प्रयुक्त होते हैं।

सामाजिक बुद्धि से उस प्रभावशाली आंतरवैयक्तिक योग्यता संबंध से तात्पर्य है जो वांछित अभीष्टों की प्राप्ति को सुगम बनाता है। सामाजिक बुद्धिसंपन्न व्यक्ति अन्य व्यक्तियों के साथ सुचारु संबंध बना रखने की कला और नैपुण्य ये युक्त होता है। अन्य प्रकारों के अंतर्गत अभिवृत्ति परीक्षणों द्वारा

सामाजिक बुद्धि में अंतर्निहित सामाजिक प्रवृत्तियों की माप होती हैं।

फिर भी, बुद्धिजन्य व्यवहार के उक्त तीन पक्षों में भी इस तरह के पर्याप्त वैयक्तिक विभेद होते हैं और निर्मित परीक्षण अपनी सीमा में मानसिक योग्यताओं की समस्त विविधता और संपन्नता को समाप्त नहीं कर सकते। किंतु॰ परीक्षणों ॰द्वारा प्राप्त सूचकांक के अंतर्गत मनोवैज्ञानिक शोध के आज के ढाँचे की सीमा में निष्पक्ष रूप से प्राप्त संगत सूचना का समस्त क्षेत्र आ जाता है। यह उपागम सिद्धांत की अपेक्षा तत्वों का ही अधिक उत्पादक रहा है और संभवतः यही इसकी शक्ति हैं।

बुद्धि परीक्षण -

ऐतिहासिक दृष्टि से बुद्धिपरीक्षण में रुचि का आरंभ उस समय हुआ जब शैक्षणिक कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यार्थियों की योग्यता के निर्धारण की शैक्षिक पाठ्यचर्या की प्रायोगिक आवश्यकता प्रतीत हुई। सन् 1904 ई में फ्रांस के पब्लिक स्कूलों में मंदबुद्धि बालकों के लिये विशेष कक्षाओं की व्यवस्था संबंधी संस्तुतियों का निर्धारण करने के लिये एक आयोग गठित किया गया था। वहाँ के मनोवैज्ञानिक ऐल्फ्रेड बिने सदस्य नियुक्त हुए। इस नियुक्ति से उन्हें उन कतिपय परीक्षणों के प्रयोग का अवसर मिला जिन्हें वे तथा उनके सहयोगी साइमन विकसित कर रहे थे। सामान्य बालक और मंदबुद्धि बालक का विभेद करने के लिये किसी ठीक ठीक माध्यम के निर्माण में इन लोगों की प्रधान रुचि थी। वैयक्तिक विभेद विषयक गाल्टन के अनुसंधानों ने बिने की प्राक्कल्पनाओं के विकास में सहायता पहुँचाई। प्रायोजना के विकास का पहले से ही मार्ग प्रशस्त कर दिया था।

विभिन्न अवस्था के व्यक्तियों की तुलना तथा एक ही उम्र के विभिन्न व्यक्तियों की तुलना करने के लिये बिने ने एक बुद्धिपरीक्षण का निर्माण किया। परीक्षण के विकास में देखा गया कि ऐसे अनेक कार्य हो सकते हैं जिन्हें करने में किसी अवस्था के, जैसे दस वर्ष के बालक तो समर्थ होते हैं जब कि अपेक्षाकृत कम उम्र के बालक उन्हें पूरा करने में निश्चित रूप से असमर्थ होते हैं। यदि कोई बालक कोई ऐसा कार्य कर सकता है, जिसे 10 वर्ष के अधिकतर बालक कर सकते हैं, तो उस बालक की॰ मानसिक वय ॰10 वर्ष मानी जायगी, चाहे उसकी वास्तविक उम्र छह, आठ, अथवा 14 वर्ष हो। मान लीजिए यदि आठ वर्ष के एक बालक की मानसिक उम्र 10 वर्ष है, तो उसे अपनी अवस्था के अनुसार प्रखर - वास्तव में दो वर्ष अधिक प्रखर-कहा जायगा। दूसरी ओर 14 वर्ष की वास्तविक उम्रवाले बालक की यदि मानसिक वय केवल 10 वर्ष हो तो उसे चार वर्ष पिछड़ा, या मंद, कहेंगे।

स्वंय बिने ने अपने परीक्षण में दो बार संशोधन किया और उनका अंतिम परीक्षण सन् 1911 में निकला। बिने के परीक्षण के इसी अंतिम रूप का एलदृ एमदृ टर्मन ने स्टैंफोर्ड विश्वविद्यालय में प्रयोग किया जहाँ बिने परीक्षण के तीन स्टैंफोर्ड परिष्कार हुए। इनमें से प्रथम 1916 में, दूसरा 1937 में और तीसरा 1959 में निकला।

बिने की मानसिक वय ॰का परिमार्जन किया गया और बालक की मानसिक उम्र को उसकी वर्षायु से भाग देकर उसमें 100 से गुणा करके बुद्धि उपलब्ध) इंटेलिजेंस कोंशट, क्ष, घ् (.निकलने का प्रस्ताव किया गया। इस प्रकार क्ष घ् 3 100 अग्ऋक्.ऋ.। अत ः एक औसत बालक की मानसिक उम्र उसकी वर्षायु के बराबर होती हैं, अतः 100 से ऊपर की बुद्धि उपलब्धि औसत से अधिक एवं 100 से नीचे की बुद्धि उपलब्धि औसत से कम मानसिक योग्यता की द्योतक होगी। सामान्य रूप से उद्देश्य यह रहा है कि मानक को इस प्रकार व्यवस्थित कर दिया जाय कि किसी बालक की बुद्धि उपलब्धि उसकी उम्र बढ़ते रहने पर भी स्थिर रहे। स्टैंफोर्ड बिने परीक्षण का अधिकतर प्रयोग चार से 14 वर्ष की सीमा के भीतर के बालकों के लिये ही होता है। प्रमुख रूप से प्रौढ़ों के मापनार्थ निर्मित एक परीक्षण का नाम॰ वेक्शलर बेलेव्यू मान स्केल ॰है। इस परीक्षण द्वारा मानसिक वय तो प्राप्त नहीं होती किंतु बौद्धिक उपलब्धि अवश्य ज्ञात होती है। इसका अंकन इस प्रकार अभियोजित है कि प्रत्येक स्तर के लिये क्ष घ् 100 होता है। इस प्रकार 50 वर्ष का एक व्यक्ति जो 125 क्ष.घ प्राप्त करता है, सामान्य रूप से 50 वर्ष के अन्य व्यक्तियों से उतना ही w श्रेष्ठ कहा जायगा कितना 125 क्ष. घ् प्राप्त करनेवाला 30 वर्ष का व्यक्ति अन्य 30 वर्ष के लोगों से श्रेष्ठ होगा।

स्टैंफोर्ड-बिने तथा वेक्शलर बेलेव्यू, दोनों ही परीक्षण वैयक्तिक परीक्षण हैं और इनसे एक समय में एक ही बालक या वयस्क का परीक्षण किया जा सकता है। किंतु इनके अतिरिक्त अन्य वैयक्तिक परीक्षण भी हैं और ऐसे परीक्षण भी हैं जिनका एक बार में सामूहिक रूप से अनेक व्यक्तियों पर प्रयोग किया जा सकता है।

भारत में व्यक्तित्वपरीक्षण और बुद्धि परीक्षण -

कालक्रम की दृष्टि से भारत में व्यक्तित्वपरीक्षण की अपेक्षा बुद्धिपरीक्षणों का आरंभ पहले हुआ। विदेशी परीक्षणों का भारतीय स्थितियों के अनुकूल रूप तैयार करने का प्रयत्न सर्वप्रथम हर्बर्ट सीदृ राइस ने सन् 1922 में लाहौर में किया। उन्होंने बुद्धिमापन के बिने स्केल पर कार्य करते हुए केवल बालकों के लिये उर्दू और पंजाबी में॰ हिंदुस्तानी बिने पर्फार्मेन्स प्वाइंट स्केल ॰का निर्माण किया। बाद में सन् 1935 में बालक और बालिकाओं दोनों के लिये बंबई में वीदृ पीदृ कामथ ने मराठी और कन्नड़ में बिने स्केल की रचना की। बिने स्केल के परिमार्जन बाद में बँगला) ढाका ट्रेनिंग कालेज (, हिंदुस्तानी) पटना ट्रेनिंग कॉलेज (, तमिल और तेलुगू) लेडी विलिंगडन ट्रेनिंग कॉलेज, मद्रास (तथा हिंदी) गुप्ता का बिने परीक्षण, खजुआ, यूह पीदृ (में भी निकले। इनके अतिरिक्त स्टैंफोर्ड परिमार्जन के अनेक अन्य अनुकूलनों का व्यवहार किया गया। इन परिमार्जनों के अतिरिक्त, इलाहाबाद के सोहनलाल ने सन् 1952 में विद्यालय में पढ़नेवाले बालकों के लिये हिंदी और उर्दू में सामूहिक बुद्धिपरीक्षण का और इलाहाबाद के ही सीदृ एमदृ भाटिया ने सन् 1945 में भारतीयों के लिये बुद्धि के क्रियात्मक) फर्फारमेंस (परीक्षण का निर्माण किया।

इलाहाबाद इंविंग क्रिश्चियन कालेज के जेह हेनरी ने सन् 1927 में भारतीय स्थितियों के अनुकूलन प्रथम शाब्दिक सामूहिक परीक्षण का निर्माण किया। इनका प्राइमरी क्लासिफिकेशन परीक्षण, शैक्षिक और बुद्धिपरीक्षणों का संमिश्रण था और यह हिंदी, उर्दू तथा अंग्रेजी में तैयार किया गया था। काशी

हिंदू विश्वविद्यालय के लज्जाशंकर झा ने सन् 1933 में रिचार्डसेन केर सिप्लेक्स मेंटल टेस्ट रका हिंदी अनुकूलन प्रकाशित किया और इसके बाद सिंप्लेक्स परीक्षण के ही आयु वर्ग के लिये टर्मन के ग्रुप टेस्ट ऑव मेंटल एबिलिटी रपर कार्य किया। इनके बाद एसदृ जलोटा) सामूहिक शाब्दिक परीक्षण (और लाहौर के आरद्य आरह कुमारिया) असूर सामूहिक बुद्धिपरीक्षण (, लखनऊ के एलदृ केदृ शाहदृद्द) कालेज के विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता के लिये सामूहिक परीक्षण (, मद्रास के सीदृ टीदृ फिलिप) तामिल में मानसिक योग्यता का शाब्दिक परीक्षण (, पटना के एसदृ एमह मोहसिन) हिंदुस्तानी सामूहिक बुद्धिपरीक्षण (आदि ने भारत में शाब्दिक सामूहिक परीक्षणों के निर्माण की दिशा में योगदान दिया है।

व्यक्तित्वपरीक्षण की दिशा में भारत में प्रथम प्रयास लाहौर के बीदृ मलह ने किया। इनकीर व्यक्तित्व प्रश्नावली रका उद्देश्य किशारों के संवेगात्मक परीक्षणों को उनकी निर्माणविधि के आधार पर तीन उपवर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है जो इस प्रकार हैंः प्रश्नावली, प्रक्षेपीय परीक्षण तथा क्रमनिर्धारण मान।

इस क्षेत्र में प्रश्नावली विधि का अधिकांश भारतीय मनोवैज्ञानिकों ने प्रयोग किया है। इनमें से कुछ नाम ये हैं--मैसूर के बीह कुप्पूस्वामी, बनारस के एसदृ जलोटा, लखनऊ के एचदृ एसदृ अस्थाना, बनारस के एमट्ट एसदृ एलदृ सक्सेना इलाहाबाद के डीदृ सिनहा, इलाहाबाद की मनोविज्ञानशाखा, कलकत्ता का शैक्षणिक और मनोवैज्ञानिक अनुसंधन ब्यूरो, बिहार का शैक्षिक और व्यावसायिक निर्देशन ब्यूरो इत्यादि। वर्तमान समय में हमारे अधिकांश भारतीय विश्वविद्यालयों में प्रश्नावली विधि से व्यक्तित्वपरीक्षण की दिशा में पर्याप्त कार्य हो रहा है। भारत में व्यक्तित्व के प्रक्षेपीय परीक्षण के प्रयोग के लिये हम इलाहाबद की मनोविज्ञान शाला द्वारा ऋच् के अनुकूलन तथा यूदृ पारिख द्वारा रोजेनवीग के पिक्चर फ्रस्ट्रेशन परीक्षण का उल्लेख कर सकते हैं। अनेक भारतीय विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों द्वारा अपनी शैक्षिक आवश्यकता के लिये रोर्शा परीक्षण का सर्वाधिक प्रयोग किया जा रहा है। व्यक्तित्व परीक्षण के लिये क्रमनिर्धारण मान विधि के प्रयोगों के संबंध में श्री जमुना प्रसाद केर व्यक्तित्व अभियोजन संबंधी क्रमनिर्धारण मान रका उल्लेख किया जा सकता है।

विशिष्ट मानसिक योग्यता -

बुद्धिपरीक्षणों का अमूर्त) ऐब्स्ट्रैक्ट (बुद्धि की माप कहते हैं जो सामान्य मानसिक योग्यता के द्योतक होते हैं। इस मत के प्रवर्त्तक यह विश्वास करते हैं कि सहायक शैक्षणिक नीतियों के द्वारा सामान्य बुद्धि का परीक्षण मात्र विद्यार्थियों को किसी व्यवसाय के लिये आवश्यक है। इस प्रकार के दृष्टिकोण का विरोध ऐसे मनोवैज्ञानिक करते हैं जो आदत की विशिष्टता अथवा योग्यता की विशिष्टता पर जोर देते हुए कहते हैं कि बुद्धि जैसी कोई चीज़ नहीं वरन् इसके स्थान पर अनेक बुद्धियाँ होती हैं जो अमूर्त के अतिरिक्त अन्य प्रकार की योग्यताओं से मिलकर बनी होती हैं। यह तथ्य कि एक व्यक्ति किसी एक कार्यक्षेत्र के लिये योग्यता रखता है, इस बात की प्रत्याभूति नहीं है कि वह कार्य के अन्य क्षेत्रों में भी उतना ही योग्य होगा। अत : शद्धता के हित में यही उचित है किर बद्धिमान रशब्द को विशिष्ट स्थितियों के विशिष्ट व्यवहारों के वर्णन के लिये सुरक्षित रखा जाय। कभी व्यक्ति बुद्धिमत्तापूर्वक और कभी मूर्खतापूर्वक व्यवहार करता है। रकारण विश्लेषण रके नाम से ख्यात एक विस्तृत सांख्यिक पद्धति के द्वारा मनुष्य की योग्यताओं को छाँटने के लिये अनेक अध्ययन किए गए हैं। भाषात्मक, यांत्रिक, कलात्मक, संगीतात्मक, लिपिक तथा पुष्टकायिक आदि सर्वाधिक उपलब्ध विशिष्ट योग्यताएँ हैं। हम अपने प्रति दिन के अनुभव द्वारा ये देख सकते हैं कि एक व्यक्ति इनमें से किसी एक योग्यता क्षेत्र में पारंगत होते हुए भी अन्य में हीन या पिछड़ा हुआ होता है।

अभिवृत्ति (रुझान) और अभिरुचि -

अभिवृत्ति से हमारा तात्पर्य किसी कौशल विशेष में नैपुण्य प्राप्त करने की व्यक्ति की अप्रकट और अविकसित योग्यता से है। अतः अभिवृत्तियों के मापन के लिये विशेष रूप से निर्मित परीक्षण भावी क्षमताओं की प्रभावोत्पादकता के पूर्वकथन को संभव बनाने का प्रयास करते हैं। अत : भावी निष्पत्तियों के पूर्वकथानात्मक परीक्षण विभिन्न योग्यताओं से संबद्ध होते हैं, अत : कार्य के विभिन्न क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करने के लिये अनेक अभिवृत्तिपरीक्षणों का निर्माण किया गया है। इस प्रकार हमें सामान्य यांत्रिक, लिपिक, संगीतात्मक तथा अन्य अभिवृत्तिपरीक्षण उपलब्ध हैं।

प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् निर्मितर मिनेसोटा फॉर्म बोर्ड रपरीक्षण का उल्लेख यांत्रिक योग्यता के मापन के सर्वाधिक वैध माध्यम के रूप में किया गया है। इसमें अलग अलग भागों में कटे दो आयामोंवोल रेखाचित्र परीक्ष्य व्यक्ति के सामने रखे जाते हैं जिनमें से उसे ऐसा रेखाचित्र चुनना होता है जो मूल रेखाचित्र में दिखाए गए ठीक ठीक भागों से मिलकर बना हो। यह परीक्षण उन यांत्रिक योग्यताओं का मापन करता है जो स्थानगत वस्तुओं के प्रत्यक्षीकरण तथा जोड़ने तोड़ने की प्रक्रिया से संबद्ध होती हैं। अन्य अभिवृत्तिपरीक्षणों के संबंध में यही कहा जा सकता है कि विशिष्ट योग्यतामापक उदाहरणों की कमी नहीं है।

अभिरुचियों की व्यक्तित्व के उन प्रेरणात्मक पक्षों का अभिव्यंजक कहा गया है जिनका विकास अनुभूत आवश्यकताओं से होता है। अनेक व्यक्तियों में विविध प्रकार के कार्यों के लिये समान योग्यता देखी जाती है, किंतु उनके प्रति इनकी अभिरुचि में स्पष्ट अंतर होता है। यह निर्विवाद है कि हम उसी व्यवसाय में किसी व्यक्ति की संतोषजनक प्रगति की आशा कर सकते हैं जिसके प्रति उसमें योग्यता तथा अभिरुचि दोनों एक साथ वर्तमान हों। अतः अभिरुचियों के माप को योग्यताओं के माप के साथ संयुक्त कर देने पर किसी व्यक्ति की किसी व्यवसाय विशेष में सफलता का पूर्वकथन और अधिक सशक्त हो जाता है।

अनेक अभिरुचि प्रश्नावलियों का निर्माण किया गया जिनमेंर क्यूडर प्रेफरेंस रेकार्ड) वोकेशनल (प्रमुख है। यह प्रश्नावली अनेक प्रकार के कार्यों के प्रति व्यक्ति की अभिरुचि का मूल्यांकन करने का प्रयास करती है। यह वर्णनात्मक मान है जिसमें परीक्ष्य व्यक्ति को तीन संभव क्रियाओं से संबद्ध प्रत्येक पद के अनुसार अपनी रुचि को--किसे वह सबसे अधिक चाहता है और किसे सबसे कम - व्यक्त करना पड़ता है। इस प्रकार हमें इन नव क्षेत्रों में से

प्रत्येक व्यक्ति की मापें उपलब्ध होती हैं: यांत्रिक, संगणनात्मक, वैज्ञानिक, अननयी, कलात्मक, साहित्यिक, संगीतात्मक, सामाजिक सेवा और लिपिक। स्ट्रांग कार वोकेशनल इंटरेस्ट ब्लैंक एक अन्य बहुप्रयुक्त व्यावसायिक अभिरुचि तालिका है। स्ट्रांग का सर्वविषयक चार्ट पचास व्यवसायों और कार्यों के क्षेत्र में, जिनमें कानून, चिकित्सा, शिक्षण, इंजीनियरिंग, विक्रेता का कार्य और लेखा आते हैं, व्यक्ति की अभिरुचियों की शक्ति की माप प्रदान करता है।

शैक्षिक निर्देशन और व्यावसायिक चुनाव -

अभिवृत्ति और अभिरुचि की माप किसी व्यक्ति के भावी जीवन की निष्पत्तियों के सूचनांक प्रदान करते हैं। अतः उसे अपने जीवन की योजना बनाने में जिससे उसकी निष्पत्तियाँ और क्षमताएँ समाज में उसके स्थान की आवश्यकताओं के अनुकूल हो सकें, निर्देशन की आवश्यकता होती है। प्रत्येक मनुष्य की योग्यताओं में वैयक्तिक अंतर होता है, अतः निर्देशन तभी प्रभावकर हो सकता है जब वह शैक्षिक प्रयत्नों के आरंभ में ही प्राप्त हो सके। इसके द्वारा विद्यार्थियों को उनकी लगभग समान योग्यता की कक्षाओं में वर्गीकृत करने में सहायता मिलती है। इस प्रकार वर्गीकृत विद्यार्थियों की आवश्यकता की पूर्ति के लिये एक सुसंचारित शैक्षिक नीति का होना भी आवश्यक है।

शैक्षिक निर्देशन बहुत अंशों तक साधारणतया बुद्धिपरीक्षणों द्वारा नापी गई व्यक्ति की बौद्धिक अभिवृत्ति पर आधारित होता है। विद्यार्थी को अपना शैक्षिक अभीष्ट अपनी अभिवृत्ति से न तो बहुत ऊँचा और न बहुत नीचा, वरन् अनुकूल रखने के लिये प्रोत्साहित करना चाहिए। इसके अतिरिक्त उसे सर्वाधिक लाभप्रद अभिरुचि विकसित तथा अर्जित करने के लिये सहायता प्रदान करते हुए किसी ऐसी अभिरुचि विशेष में चिपके रहने नहीं देना चाहिए जो उसने अर्जित कर ली हो। निःसंदेह, अभिभावक की साधनसंपन्नता उसे जीवन के विभिन्न कार्यों के लिये तैयार करने में महत्वपूर्ण सहायक तत्व होता है।

सफल व्यावसायिक चुनाव के लिये आवश्यक है कि बुद्धि, अभिवृत्ति, अभिरुचि और व्यक्तित्व की प्रवृत्तियों के माप द्वारा उपलब्ध तथ्यगत प्रदत्तों का सतर्क विवेचन पहले से ही कर लिया जाय। अत : बुद्धि को मनोवैज्ञानिक परीक्षणों द्वारा सर्वाधिक सरलता से नापा जा सकता है, अतः व्यवसाय के चुनाव में किसी भी अन्य विशिष्टता की अपेक्षा बुद्धिपरीक्षण को अधिक महत्व दिया गया है। फिर भी इसके लिये बुद्धि के अतिरिक्त अन्य प्रकार की सूचनाएँ भी आवश्यक हैं। साथ ही, कुछ प्रकार की व्यावसायिक सफलता के लिये व्यक्तित्व प्रवृत्तियाँ जैसे प्रभुत्वस्थापन, आक्रामता और निष्ठा अत्यधिक महत्वपूर्ण होती हैं।

शैक्षिक निर्देशन और व्यावसायिक चुनाव -

अभिवृत्ति और अभिरुचि की माप किसी व्यक्ति के भावी जीवन की निष्पत्तियों के सूचनांक प्रदान करते हैं। अत : उसे अपने जीवन की योजना बनाने में जिससे उसकी निष्पत्तियाँ और क्षमताएँ समाज में उसके स्थान की आवश्यकताओं के अनुकूल हो सकें, निर्देशन की आवश्यकता होती है। प्रत्येक मनुष्य की योग्यताओं में वैयक्तिक अंतर होता है, अतः निर्देशन तभी प्रभावकर हो सकता है जब वह शैक्षिक प्रयत्नों के आरंभ में ही प्राप्त हो सके। इसके द्वारा विद्यार्थियों को उनकी लगभग समान योग्यता की कक्षाओं में वर्गीकृत करने में सहायता मिलती है। इस प्रकार वर्गीकृत विद्यार्थियों की आवश्यकता की पूर्ति के लिये एक सुसंचारित शैक्षिक नीति का होना भी आवश्यक है।

बहुत अंशों तक साधारणतया बुद्धिपरीक्षणों द्वारा नापी गई व्यक्ति की बौद्धिक अभिवृत्ति पर आधारित होता है। विद्यार्थी को अपना शैक्षिक अभीष्ट अपनी अभिवृत्ति से न तो बहुत ऊँचा और न बहुत नीचा, वरन् अनुकूल रखने के लिये प्रोत्साहित करना चाहिए। इसके अतिरिक्त उसे सर्वाधिक लाभप्रद अभिरुचि विकसित तथा अर्जित करने के लिये सहायता प्रदान करते हुए किसी ऐसी अभिरुचि विशेष में चिपके रहने नहीं देना चाहिए जो उसने अर्जित कर ली हो। निःसंदेह, अभिभावक की साधनसंपन्नता उसे जीवन के विभिन्न कार्यों के लिये तैयार करने में महत्वपूर्ण सहायक तत्व होता है।

सफल व्यावसायिक चुनाव के लिये आवश्यक है कि बुद्धि, अभिवृत्ति, अभिरुचि और व्यक्तित्व की प्रवृत्तियों के माप द्वारा उपलब्ध तथ्यगत प्रदत्तों का सतर्क विवेचन पहले से ही कर लिया जाय। अत : बुद्धि को मनोवैज्ञानिक परीक्षणों द्वारा सर्वाधिक सरलता से नापा जा सकता है, अतः व्यवसाय के चुनाव में किसी भी अन्य विशिष्टता की अपेक्षा बुद्धिपरीक्षण को अधिक महत्व दिया गया है। फिर भी इसके लिये बुद्धि के अतिरिक्त अन्य प्रकार की सूचनाएँ भी आवश्यक हैं। साथ ही, कुछ प्रकार की व्यावसायिक सफलता के लिये व्यक्तित्व प्रवृत्तियाँ जैसे प्रभुत्वस्थापन, आक्रामता और निष्ठा अत्यधिक महत्वपूर्ण होती हैं।

निष्कर्ष -

- संस्कृति, सामाजिक मूल्य, वित्तीय प्रबंधन, समय प्रबंधन, राजनीतिक विकास, पर्यावरण, शिक्षक गरिमा, संचार कौशल, रोज़गार योग्यता, जीवन मूल्य
- आत्म नियंत्रण, लक्ष्य निर्धारण, आत्म संवाद, प्रेरणा, योग ध्यान, सकारात्मक सोच
- स्वॉट एनालिसिस, नकारात्मक विचारों पर नियंत्रण
- तनाव प्रबंधन, अवसाद पर नियंत्रण
- प्रभावी लेखन, शिष्टाचार, हार्ड स्किल्स और सॉफ़्ट स्किल्स

व्यक्तित्व विकास के लिए समय प्रबंधन, लक्ष्य निर्धारण, और नकारात्मक विचारों पर नियंत्रण करना ज़रूरी है.
व्यक्तित्व विकास से व्यक्ति अपने जीवन में सफलता पा सकता है।

शिक्षा के वैयक्तिक तथा सामाजिक उद्देश्य

डॉ. रमेश प्रसाद कोल

सहायक प्राध्यापक, राजनीतिशास्त्र विभाग,
शासकीय रणविजय प्रताप सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
जिला उमरिया, म0प्र0. भारत, 484661

Email- dr.rameshprasadkol@gmail.com
Mobile No.7898391562

सारांश -

व्यक्तिगत विकास या आत्म-सुधार में ऐसी गतिविधियाँ शामिल होती हैं जो व्यक्ति की क्षमताओं और संभावनाओं को विकसित करती हैं, मानव पूंजी का निर्माण करती हैं, रोजगार योग्यता को सुगम बनाती हैं। जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाती हैं और सपनों और आकांक्षाओं को साकार करने में सहायता करती हैं। व्यक्तिगत विकास किसी व्यक्ति के पूरे जीवनकाल के दौरान हो सकता है और यह किसी व्यक्ति के जीवन के एक चरण तक सीमित नहीं है। इसमें शिक्षक, मार्गदर्शक, परामर्शदाता, प्रबंधक, कोच या संरक्षक जैसी भूमिकाओं में दूसरों को विकसित करने के लिए आधिकारिक और अनौपचारिक क्रियाएं शामिल हो सकती हैं और यह स्वयं सहायता तक ही सीमित नहीं है। जब संस्थानों के संदर्भ में व्यक्तिगत विकास होता है, तो यह संगठनों में व्यक्तिगत स्तर पर सकारात्मक वयस्क विकास का समर्थन करने के लिए पेश किए जाने वाले तरीकों, कार्यक्रमों, उपकरणों, तकनीकों और मूल्यांकन प्रणालियों को संदर्भित करता है।

कीवर्ड - राष्ट्रीय, शिक्षा, नीति 2020, व्यावसायिक

परिचय -

मानव बड़ा है अथवा समाज ? यह प्रश्न प्राचीन काल से ही विद्वानों के समक्ष विचारणीय रहा है। कुछ विद्वान् समाज की अपेक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व पर बल देते हैं, को कुछ समाज के हित के समक्ष व्यक्ति को बिलकुल महत्वहीन मानते हुए उसे समाज की उन्नति के लिए बलिदान तक कर देने के पक्ष में हैं। इस वाद-विवाद के आधार पर की शिक्षा के व्यक्तिक तथा सामाजिक उद्देश्यों का सर्जन हुआ है। शिक्षा सम्बन्धी सभी उदेश्य प्रायरू इन्ही दोनों उद्देश्यों में से किसी एक उदेश्य के पक्ष में बल देते हैं। अब प्रश्न यह उठता है कि शिक्षा के इन दोनों उद्देशों में समन्वय स्थापित किया जा सकता है अथवा नहीं ? यदि अन्तर केवल बल देने का ही तो इन दोनों उद्देश्यों के बीच समन्वय स्थापित करने में कोई कठिनाई नहीं होगी। परन्तु इसके लिए हमें निष्पक्ष रूप से इन दोनों उद्देश्यों के संकुचित तथा व्यापक रूपों का अलग-अलग अध्ययन करके यह देखन होगा कि इन दोनों उद्देश्यों में कोई वास्तविकता विरोध है अथवा केवल बल देने का अन्तर है। निम्नलिखित पक्तियों में हम शिक्षा के इन दोनों उद्देश्यों पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाल रहे हैं।

वैयक्तिक उदेश्य का अर्थ -

शिक्षा का व्यैक्तिक उद्देश्य एक प्राचीन उद्देश्य है। इस उद्देश्य के सार्थक समाज की अपेक्षा व्यक्ति को बड़ा मानते हैं। उसका विश्वास है कि व्यक्तियों के बिना समाज कोरी कल्पना है। व्यक्तियों ने ही मिलकर अपने हितों की रक्षा करने के लिए समाज की रचना की है तथा समय-समय पर संस्कृति, सभ्यता एवं विज्ञान के क्षेत्रों में भी अपना-अपना योगदान दिया है। इस योगदान के फलस्वरूप ही सामाजिक प्रगति का क्षेत्र बड़ा और बढ़ता चला जा रहा है। दुसरे शब्दों में, व्यक्ति के विकास से ही समाज का विकास हुआ तथा दिन-प्रतिदिन हो रहा है। अतरू शिक्षा को व्यक्तिगत रुचियों, क्षमताओं तथा विशेषताओं का विकास करना चाहिये। इसीलिए कुछ शिक्षा-शास्त्रियों ने शिक्षा के व्यैक्तिक उद्देश्य का समर्थन किए है।

यदि ध्यान से देखा जाये तो पता चलेगा कि शिक्षा का व्यक्तिक उद्देश्य नया उद्देश्य नहीं है। प्राचीनकाल में ग्रीस, भारत तथा अन्य पाश्चात्य देशों में भी शिक्षा के व्यैक्तिक उद्देश्य को प्रमुख स्थान दिया जाता था। मध्यकाल में अवश्य सामूहिक शिक्षा के ढंग को अपनाया गया जिसके कारण व्यक्तितत्व के विकास की ओर कोई ध्यान नहीं दिया गया। इस उद्देश्य को पूरी तरह समझने के लिए इसके संकुचित तथा व्यापक अर्थों का समझना आवश्यक है।
नन के विचार से विशेष प्रकार के व्यक्तित्व से ही संसार की उन्नति हो सकती है। अतरू बालक को उसकी मूल प्रवृतियों के अनुसार विकसित होने की पूर्ण स्वतंत्रता मिलनी चाहिये। किसी भी बालक को ऐसा कार्य करने के लये विवश करना उचित नहीं है जिसको करने के लिए वह बना ही नहीं है। यदि बालक की रुचियों तथा मूल प्रवृतियों की अवहेलना करके उस पर सामाजिक नियमों को बल-पूर्वक थोपा जायेगा तो उसका विशेष व्यक्तित्व कुण्ठित हो जायेगा। अतरू प्रत्येक माता-पिता, शिक्षक, समाज तथा राज्य का कर्तव्य है कि वह प्रत्येक बालक की शिक्षा की व्यवस्था उसके विशेष व्यक्तित्व के विकास को दृष्टि में रखते हुए करे जिससे वह अपनी इच्छानुसार विकसित हो सके। इस प्रकार संकुचित अर्थ में शिक्षा के व्यक्तिक उद्देश्य का आशय आत्माभिव्यक्ति अथवा प्राकृ तिक विकास है।

व्यैक्तिक उद्देश्य का व्यापक अर्थ -

व्यापक अर्थ में शिक्षा व्यैक्तिक उद्देश्य हमारे सामने आत्मानुभूति के रूप में प्रकट होता है। मनोविज्ञान भी व्यक्तित्व के विकास के व्यापक अर्थ का

समर्थन करता है। आधुनिक मनोविज्ञानिक प्रयोगों ने यह सिद्ध कर दिया है कि प्रत्येक बालक एक दुसरे से शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा संवेगात्मक दृष्टी से भिन्न होता है। यह भिन्नता रुचियों, शक्तियों, विचारों तथा कार्य करने की क्षमता में भी होती है। यही नहीं, प्रत्येक बालक की सामान्य बुद्धि, जीवन के आदर्श तथा कार्य करने की गति करने की गति से भी महान अन्तर होता है। किसी बालक की बुद्धि मन्द होती है, तो किसी की प्रखर। ऐसे ही एक बालक शारीरिक कार्य करने में रूचि लेता है तो दूसरा मानसिक कार्य को करना अधिक पसन्द करता है। इसी प्रकार कोई बालक किसी अमुक कार्य को जल्दी समाप्त कर लेता है तो उसी कार्य को दूसरा बालक देरी से कर पाता है। इस प्रकार हम देखते हैं की कोई से दो बालक प्रत्येक दृष्टि से एक से नहीं हो सकते।

बुद्धि तथा योग्यताओं के इन भेदों को दृष्टि में रखते हुए प्रत्येक बालक के लिए एकसा कठोर पाठ्यक्रम बनाकर सबको एक ही प्रकार की शिक्षा प्रदान करना अपनोवैज्ञानिक है। ऐसा करने से बालकों का समुचित विकास नहीं हो सकता। यदि प्रत्येक बालक के व्यक्तित्व का उतम विकास करना है तो व्यक्तिगत विभिन्नता के सिद्धांत को दृष्टि में रखना होगा। अतरू प्रत्येक स्कूल का कर्तव्य है कि वह बालक की रुचियों, आवश्यकताओं तथा योग्यताओं को दृष्टि में रखते हुए उसके समक्ष ऐसे अवसर प्रदान करे जिनके आधार पर उसकी मूल-प्रवृतियों निखर जायें तथा उसकी

समस्त शक्तियों एवं गुणों का समुचित विकास हो कर वह एक उत्तम व्यक्ति बन जाये। दुसरे शब्दों में, शिक्षा की व्यवस्था बालकों की आवश्यकताओं तथा समाज के कल्याण को ध्यान में रख कर होनी चाहिये। माता-पिता भी अपने बालकों को स्कूलों में शिक्षा प्राप्त करने इसीलिए भेजते हैं कि उनके बालक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात जब बड़े होकर समाज में प्रवेश करें तो ये उपयोगी नागरिकों के रूप में समाज के विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय रूप से भाग लेकर अपना-अपना भार स्वयं वहन कर सकें। इससे व्यक्ति तथा समाज दोनों का कल्याण सम्भव है। नन ने इसी विचार की पुष्टि करते हुए लिखा है शिक्षा बालक को इस प्रकार से सहायता प्रदान करे कि वह समाज में अथवा मानवीय जीवन को अपनी योग्यतानुसार मौलिक योगदान दे सके।ः उपर्युक्त आशय की पूर्ति के लिए नन के मतानुसार समाज, राज्य तथा शिक्षा संस्थाओं को

बालक की रुचियों तथा प्रवृतियों को सामाजिक आवश्यकताओं के अनुसार विकसित करना चाहिये जिससे उसके व्यक्तित्व का उच्चतम विकास हो जाये तथा वह बड़ा हो कर आनन्दमय जीवन व्यतीत कर सके।

नन का अपनी पुस्तक के द्वितीय अध्याय में शिक्षा के व्यैक्तिक उद्देश्य की पुष्टि करने के लिए जिवविज्ञान का सहारा लेना तथा यह कहना कि प्रत्येक वस्तु अपनी प्रकृति के अनुसार पूर्णता प्राप्त करती है, उसके प्रकृतिवादी होने का संकेत करती है। ध्यान देने की बात है कि नन ने व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग इस प्रकार से किया है कि लोग भ्रम में पड़ जाते हैं। वास्तविकता यह है कि कोई भी व्यक्ति स्वयं में पूर्ण नहीं होता। वह समाज में रहता है, समाज का प्रतिनिधित्व करता है तथा समाज का ही अभिन्न अंग है। यदि व्यक्ति को समाज से प्रथक कर दिया जाये तो वह किसी भी प्रकार की उन्नति नहीं कर सकता है।

नन के उपर्युक्त कथन से स्पष्ट हो जाता है कि व्यक्तित्त्व के विकास से उसका तात्पर्य आत्माभिव्यक्ति न होकर आत्म-बोध अथवा आत्माभिव्यक्ति है। आत्माभिव्यक्ति में आत्म-प्रकाशन की भावना प्रधान होती है। इससे व्यक्ति अपनी मूल-प्रवृतियों के वशीभूत होकर बिना किसी रोक-टोक के स्वछंद रूप से कार्य करता है। वह यह नहीं देखता की उसकी क्रियाओं में समाज का क्या तथा कितनी हानि हो सकती है। इसके विपरीत आत्म-अनुभूति में आत्म वह आदर्श आत्म है जिसकी हम कल्पना करते हैं तथा जिसकी अनुभूति केवल दूसरों की रुचियों को ध्यान में रखते हुए ही की जा सकती है। आत्म-अनुभूति में व्यक्ति समाज की सेवा करना अपना परम कर्तव्य समझता है। उसकी आत्मा को ऐसे कार्यों के करने में सुख और शान्ति प्राप्त होती है जिनसे समाज का लाभ होता है।

इस प्रकार व्यापक अर्थ में शिक्षा के व्यैक्तिक उद्देश्य का आशय अतम अनुभूति है। चूँकि आत्म-अनुभूति से आत्मा का ज्ञान केवल समाज के ही माध्यम से हो सकता है इएसिलिये व्यक्ति से आशा की जाती है कि यह समाजिक हितों को ध्यान में रखते हुए अपना अधिक से अधिक विकास करे तथा समाज को यथाशक्ति मौलिक योगदान दे। जे० एम० रौस ने भी इसी विचार की पुष्टि करते हुए लिखा है दृ नन के व्यक्तित्व शब्द का अर्थ उस आदर्श से है जिसको अभी प्राप्त करने के लिए व्यक्ति प्रयत्न कर रहा है। जिसको अभी प्राप्त नहीं किया गया है अपितु प्रयत्न करके प्राप्त किया जा सकता है।

नन के विचारधारा के सामान यूकेन ने भी लिखा है शिक्षा में व्यक्तिवाद का समर्थन किया है। परन्तु उसने व्यैक्तिकता को जैविकीय अर्थ से मुक्त करते हुए आध्यात्मिक अर्थ दिया है। यूकेन का कथन है दृ हमरे जीवन का मुख्य कार्य अपने सच्चे स्वरुप को विकसित करना और व्यक्तित्व तथा अध्यात्मिक व्यक्तित्व के परिवर्तन से इस स्वरुप को निखारना होता है। प्रत्येक व्यक्ति के सामने सत्य पूर्ण व्यक्तित्व तथा अध्यात्मिक व्यक्तित्व के निर्माण का काग्य जीवन भर होता रहता है।"

यूकेन का अटल विश्वास था कि अध्यात्मिक व्यक्तिकता तथा व्यक्तिकता जन्मजात नहीं होती। हम में केवल व्यक्तित्व का निर्माण करने की शक्ति होती है। जे० एम० रौस ने भी यूकेन के इस मत का समर्थन करते हुए लिखा है दृ यूकेन के विश्वास से हम भी सहमत हैं कि जीवन की भांति शिक्षा का उद्देश्य व्यतित्त्व का उन्नयन है।"

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट हो जाता है की व्यापक अर्थ में व्यक्तित्व के विकास का अर्थ यह है कि हमारे व्यक्तित्व का पूर्ण विकास हमारे द्वारा दिया गये कर्मों पर निर्भर होता है। शिक्षा के द्वारा हम अपने व्यक्तित्व का इतना ऊँचा उठायें कि हम विश्व की सर्वोच्च सत्ता से साथ एक रूप हो सकें। व्यक्ति के विकास की इस अवस्था को आत्म-साक्षात्कार, आत्मबोध, आत्म-अनुभूति की संज्ञा दी जाती है। इस अवस्था को प्राप्त करने के लिए शिक्षा का उद्देश्य भी व्यक्तिकता का विकास होना चाहिये।

निष्कर्ष -

यह कहा जा सकता है कि व्यावसायिक शिक्षा में बुनियादी ज्ञान और मूल्य इस प्रकार शामिल होते हैं जिनमें विषय की मुख्य अवधारणायें, सिद्धांत और तकनीक के साथ साथ व्यवहार में उनके अनुप्रयोग का ज्ञान भी शामिल होता है, जैसे- चिकित्सा और कानूनी विषय द्य व्यावसायिक शिक्षा के पाठ्यक्रमों में छात्रों से अपेक्षा की जाती है कि अपनी क्षमता के ऐसे स्तर को उभरती प्रौद्योगिकियों, डिजिटल शिक्षा, उद्योग- अकादमिक सहयोग और उद्यमिता पर अधिक ध्यान देने के साथ भारत में व्यावसायिक शिक्षा का भविष्य आशाजनक दिख रहा है। स्किल इंडिया मिशन जैसी सरकार की पहल, निजी क्षेत्र के खिलाड़ियों के प्रयासों के साथ, एक मजबूत और गतिशील व्यावसायिक शिक्षा प्रणाली बनाने की संभावना है जो शिक्षार्थियों, उद्योग और अर्थव्यवस्था की जरूरतों को पूरा करेगी। मौजूदा व्यावसायिक शिक्षा प्रणाली में चुनौतियों और कमियों को दूर करना भी आवश्यक है

संदर्भ -

1. माइकल ए. वेन्स्टीन, व्यवस्थित राजनीतिक सिद्धांत, (कोलंबस, ओहियोः चार्ल्स ई. मेरिल 1971),
2. माइकल ए. वेन्स्टीन, व्यवस्थित राजनीतिक सिद्धांत, (कोलंबस, ओहियोः चार्ल्स ई. मेरिल 1971), 3. सीबी मैकफर्सन, पोजेसिव इंडिविजुअलिज्म, पी. 100, पारेख द्वारा उद्धृत, समकालीन राजनीतिक www विचारक, लंदन, 1982 I
4. वेंडी ब्राउन एज वकर्स क्रिटिकल एसेज ऑन नॉलेज एंड पॉलिटिक्स, (प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 2005) 1
5. भार्गव और आचार्य, राजनीतिक सिद्धांतः एक परिचय (नई दिल्लीः पियर्सन, 2008) में उद्धृत। 6. वैन ब्रैकेल, जे, 'प्राकृतिक प्रकार और जीवन के प्रकट रूप, डायलेक्टिका, संख्या 46 (1992) (पीपी. 243-259),

The Gurukula Education Develop to personality develop

MR. RAMPATI RAWAT
Assistant professor- history
Govt. College Dhodhar Sheopur

Abstract

The traditional Gurukul system is not widely practiced in contemporary society, however This system continues to inspire modern education systems due to its focus on holistic development and unique features. The Gurukul system has influence modern Indian education in a number of method. Objective from study This ie For know development as well as The relevance of the gurukul education system in schools in India in this modern era. Method research used_ie method integrated research studies References with studies field. Study This conducted at 5 schools Dayanand Anglo-Vedic Public School, Ananda Marga Gurukula, Bhaktivedanta Gurukula and International School, Gurukul Kishangarh Ghasera and Gurukul Kaalba with amount sample as many as 10 teachers and 5 heads school. Tool data collection using interview instruments For studies field. Deep data analysis techniques study This that is using technique descriptive. Research result This showing that Gurukul system incorporates spirituality to in education with emphasize importance moral values, discipline self, and spiritual development of students below guidance a teacher or guru. The Gurukul system teaches discipline good self and humanism_through various aspect approach his education like Student living in the Gurukul, the home of the guru or 'Acharya', is possible they Study from Teacher's example and values. Gurukul system in ancient India teach various eye lessons, incl astronomy, medicine, philosophy, science politics, economics, religion, yoga, education physical, studies defense, Vedic literature, Sanskrit, mathematics , and the sciences other Indian traditional. Discussion group play role important in Gurukul system, because discussion group is means for student For Study One each other and get involved in thinking critical, knowledge practical, and understanding analytical. System Gurukul education in ancient India offer a number of benefits, some of them Still relevant until moment This. This including Holistic Development, Emphasis on Knowledge Practical, Competition Healthy and Reducing Stress, Relationships Student-Teacher, Activities extracurricular, Development personality and Spiritual and Ethical Training. Implications from study This is that the education system Gurukula Still relevant used at the time this is necessary done adjustments and refreshing to the education system This still relevant and appropriate with development era and combined with IT will more optimal and newest.

Introduction

The Gurukul education system in India is an ancient residential education system where students live in the Gurukul, the house of the teacher or 'Acharya', and receive education, moral values, and life skills under their guidance. This system emphasizes practical knowledge, holistic development, and the passing on of knowledge and culture from generation to generation. Students are taught subjects such as Vedic literature, Sanskrit, mathematics, and other traditional Indian sciences, and the system focuses on the overall development of the student, including personality growth, spiritual awakening, and self-control. The Gurukul system is known for its emphasis on individual attention, discipline, and a combination of academic and extracurricular activities. Although the traditional Gurukul system is not widely practiced in contemporary society, it continues to inspire modern education systems due to its focus on holistic development and unique features

The Gurukul system has influenced modern Indian education in several ways. It emphasizes learning in natural environments, holistic development, and the importance of extracurricular activities such as sports, yoga, and the arts, which are now recognized as an integral part of a well-rounded education.

This system also focuses on individual attention and practical knowledge, which are aspects that modern education systems aim to implement. Additionally, the Gurukul system's emphasis on student-teacher relationships based on mutual respect and experiential learning has inspired modern educational practices. Although the traditional Gurukul system is not widely practiced today, its principles continue to inspire modern education systems in India and beyond.

Along development era many education systems new ones coming from outside enter to India for example that is National Education Policy (NEP) 2020 which includes a number change significant in education. NEP 2020 emphasizes on approach holistic For education, empowerment students, and subtraction pressure exam. With condition like That hence the Gurukul system need exists adjustments and updates to remain constant relevant with development and needs era.

A number of results study has carried out by researchers previous as done by Selvamani (2019) that ancient Gurukul Indian period has unique characteristics and qualities that are not found in system education ancient. Although its nature old and primitive, that is System Gurukul education in India is unique character with The method Alone. Then results research conducted by A. Joshi & Gupta, (2017) which states that Gurukul system is road towards another world healthy and careful. We must proceed with vision This For educate generation young and growing values ethical, social, moral and spiritual through learning holistic. Also strengthened by Soni & Trivedi, (2018) results study that the students learn various skills here_like music, art defendself, agriculture, raising livestock cow, preparation various ark (extract from urine cattle), treatment ayurveda, reading shlokas, performing yagnas, mathematics Vedas, yoga etc. Result of study relevant previously above_only focuses on the introduction and comparison of the gurukul system with the modern education system.

However in study This try discuss relevance of the inner gurukul system its implementation in a way directly in the field through study field that takes information from teachers in schools that implement the gurukul system. This matter important done Because condition in the field describe actual conditions_ How implementation of this system Still running and how to keep going exist and also adapt from dynamic knowledge education. Objective from study This that is Objective from study This ie For know development as well as The relevance of the gurukul education system in schools in India in this modern era.

Methodology

Method research used_ie method integrated research_studies References with studies field. Source literature from journal nor books become reference in studies References as for informants (practitioners direct) is source reference from studies field.

Informant in study This is some teachers from each schools that implement the education system The gurukula in India is Dayanand Anglo-Vedic Public School, Ananda Marga Gurukula, Bhaktivedanta Gurukula and International School, Gurukul Kishangarh Ghasera and Gurukul Kaalba.

Results and Discussion

Gurukul System Incorporates Spirituality Into Education The Gurukul system incorporates spirituality into education by emphasizing the importance of moral values, self-discipline, and the spiritual development of students under the guidance of a Guru or teacher.

At Gurukul, students live with their Guru, studying a variety of subjects such as Vedic scriptures, philosophy, art, and science, as well as practical skills and moral values. The relationship between Teachers and students is built on trust, respect, and mutual understanding, and Teachers are considered role models for students.

Ethics and values play a major role in everything that is done during the learning period, and students are taught to respect all living things. The Gurukul system recognizes the importance of knowledge in human spiritual progress, and education is considered a means of achieving spiritual enlightenment. The Gurukul system's emphasis on moral values, self-discipline, and spiritual development has inspired the modern education system in India and beyond.

The Gurukul System Teaches Good Self-Discipline And Humanism

The Gurukul system teaches good self-discipline and humanism through various aspects of its educational approach like Students live in the Gurukul, the home of the teacher or 'Acharya', which allows them to learn from the Guru's example and values. Teachers are role models for students, who are proud to be students and have the opportunity to learn from Teachers. Then The Gurukul system emphasizes the importance of ethics and values in everything that is done during the learning period. Students are taught to

respect all living creatures and are selected based on their impeccable conduct and moral strength. Besides That The Gurukul system focuses on experiential learning, with subjects such as medicine, philosophy, political science, economics, religion, yoga, and physical education as its main components (Jayalakshmi & Smrithi Rekha, 2022; Sengupta, 2021; Singh, 2022). Students are taught through group discussions, independent study, and practical skills. The Gurukul system also emphasizes the importance of physical, spiritual, and cultural development through activities such as sports, yoga, meditation, and the arts. These activities contribute to the overall development of students and help them become well-rounded individuals. Then The duration of student studies at Gurukul is flexible, allowing fast learners to leave w early and retain students who need more time. This flexibility in the learning process encourages students to take responsibility for their education and develop self-discipline. And the last The Gurukul system teaches students to have special respect for humans and animals living around them, fostering a good sense of humanism.

By incorporating sound self-discipline and humanism into its educational approach, the Gurukul system aims to create well-rounded, respectful, responsible and spiritually developed individuals.

What Subjects Are Taught in Gurukul System

The Gurukul system in ancient India taught a variety of subjects, including astronomy, medicine, philosophy, political science, economics, religion, yoga, physical education, defense studies, Vedic literature, Sanskrit, mathematics, and other traditional Indian sciences. This system emphasizes practical knowledge, holistic development, and the passing on of knowledge and culture from generation to generation. Apart from academic subjects, the Gurukul system also focuses on extracurricular activities such as sports, yoga and the arts, which are considered an integral part of a well-rounded education. This system relies heavily on Teachers (teachers) who are responsible for the curriculum, delivery methods, and assessment. Learning is tailored to the needs of each student and not a general curriculum. The Gurukul system's emphasis on individual attention, practical knowledge, and holistic development has inspired the modern education system in India and beyond

The Role of Group Discussions in the Gurukul System

Group discussions play an important role in the Gurukul system, as group discussions are a means for students to learn from each other and engage in critical thinking, practical knowledge, and analytical understanding. Some important aspects of group discussions in the system include:
Gurukul
1) Teachers usually have face-toface interactions with students, and group discussions are also a common feature in the learning process; 2)- The Gurukul system is divided into three categories based on the age of the students: Vasu (for
students up to 24 years of age), Rudra (for students up to 36 years of age), and Aaditya (for students up to 36 years of age). This structure allows for group discussions and age-appropriate learning activities;
3)- Group discussions are the means through which important teaching is delivered to students in subjects such as languages, science, and mathematics;
4)- The Gurukul system emphasizes the importance of arts, sports, crafts, singing, and other extracurricular activities that develop students' intelligence and critical thinking abilities;
5) Students are taught the importance of honesty, compassion, and self-control, and group
By incorporating group discussions into its educational approach, the Gurukul system encourages students to engage in active learning, critical thinking, and the development of important life skills.

Benefits of Gurukul Education System

The Gurukul education system of ancient India offered several benefits, some of which are still relevant today. These include:

1. Holistic Development, the Gurukul System focuses on the overall development of the student, including personality growth, spiritual awakening, and the passing on of knowledge and culture from generation to generation.

2. Emphasis on Practical Knowledge, It focuses on applied knowledge and prepares students for all areas of life, offering an education that is conducive to learning and has no harmful effects.
3. Healthy Competition and Reduces Stress, This system offers healthy competition and reduces stress levels among children.
4. Student-Teacher Relationship, This creates a strong teacherstudent relationship, fostering respect, discipline, and individual attention.
5. Extracurricular activities, the Gurukul System focuses on extracurricular activities such as sports, yoga, and arts, which result in the development of students' physical health and skills.
6. Personality development, This works on personality development, increasing self -confidence, self- esteem, and the ability to think independently.
7. Spiritual and Ethical Training, a system that combines spirituality, self-discipline, good manners, and humanism, aims to help students become enlightened individuals in the future.

The Gurukul system's emphasis on holistic development, practical knowledge, and student-teacher relationships, among others, continues to be appreciated, and its principles have inspired modern education systems.

Conclusion

The Gurukul education system, which originated in ancient India during the Vedicera, remains relevant even in modern times. Although the traditional Gurukul system is not widely practiced today, its influence on the modern education system can be seen in various aspects. The Gurukul system is www based on experiential learning, practical knowledge and a focus on holistic development. It emphasizes the importance of ethics, values, and spirituality in education, and strong student-teacher relationships. This system has inspired modern educational practices, such as an emphasis on a combination of academic and extracurricular activities, personalized learning, and the incorporation of technology. The Gurukul system's emphasis on holistic education, practical knowledge, and student-teacher relationships, among others, continues to be appreciated, and its principles have inspired modern education systems. Although the traditional Gurukul system has evolved over time, its core values and principles continue to influence education in the digital era.

Personality Development Through Yoga

AARTI CHOUDHARY
Sports officer
Govt. College Dhodhar- Sheopur(M.P.)

Abstract

Personality is an important theme. In modern psychology, several approaches have been adopted to understand it. However, from Yogic point of view, personality can be understood from a different perspective. A holistic personality comprises physical, emotional, intellectual, social and spiritual dimensions. This article tries to discuss personality from Yogic point of view.

1.Introduction -

Development of personality is an important issue. Personality starts developing since birth, but it assumes great importance during adolescence, when reorganisation of personality takes place.

Personality is a very common term which is used in our day-to-day life. It tells us what type of person one is. We know that each person generally behaves consistently in most of the situations. The examples of this consistency can be seen in a person who remains friendly or a person who is generally kind or helpful in most situations. Such a consistent pattern of behaviour is termed as personality. It can be called as the sum total of behaviour that includes attitudes, emotions, thoughts, habits and traits. This pattern of behaviour is characteristic to an individual.

There are various dimensions of personality. These dimensions are related to physical, emotional, intellectual, social and spiritual aspects of our behaviour. For a holistic personality development, yoga plays an important role.

2. Yoga and Personality Development -

Yogic practices are found effective for development of all dimensions of personality. Let us talk about the vogic practices that influences development of different dimensions of personality

Yoga and Physical Dimension of Personality :

Physical dimension is related to our body. It means that all organs and systems of our body should be properly developed and function. It implies a healthy body without any disease. Yogic practices like asana, pranayama, and bandha play a beneficial role in physical development of children. There is a series of asanas and pranayamas which help to improve the functioning of the body.

Yoga and Emotional Dimension of Personality :

Yogic practices are effective for development of emotional dimension related to our feelings, attitudes and emotions. There are two kinds of emotions: positive and negative. For example love, kindness are positive emotions, while anger and fear (exam phobia) arenegative emotions. Similarly, our feelings and attitudes may be positive and negative. For emotional development, positive feelings, attitudes and emotions should be developed and negative ones should be controlled, as the negative attitudes and emotions work as a mental block for the development of personality. Yoga plays a critical role in development of positive emotions. It brings emotional stability. It helps to control negative emotions. Yogic practices such as yama, niyama, asana, pranayama, pratyahara and meditation help in emotional management. For example, the principle of non-violence will protect us from negative emotions and develop positive feelings of love and kindness. Similarly, other principles of yama and niyama will help to develop positive emotions and attitudes in our personal and social life and therefore help in the management of emotions.

Yoga and Intellectual Dimension of Personality:

Intellectual development is related to the development of our mental abilities and processes such as critical thinking, memory, perception, decision making, imagination, creativity, etc. Development of this dimension is very important as it enables us to learn new things and acquire knowledge and skills. Yogic practices such as asana, pranayama, dharana, dhyana (meditation) help to develop concentration, memory and thereby help in intellectual development.

Yoga and Social Dimension of Personality:

Primary socialisation, probably the most important aspect of the personality development takes place during infancy, usually within the family. By responding to the approval and disapproval of parents and grandparents and imitating their examples, thechild learns the language and many of the basic behaviour patterns of her/his society. The process of socialisation is not limited to childhood, but continues throughout life and teach the growing child and adolescent about the norms and rules of the society in which she/he lives. Some key elements of this process include respect for others, listening carefully to other persons, being interested in them, and voicing your thoughts and feelings politely, honestly and clearly so that you can be easily heard and understood. Principles of yama include these key elements and are very important as these help us in the betterment of our relationships with our friends, parents, teachers and others.

Yoga and Spiritual Dimension of Personality:

This dimension is related to the development of values. It is also concerned with self-actualisation which is related to recognising one's potential and developing them to the maximum. Properdevelopment of this dimension helps the person to realise one's true identity. For spiritual development, yama, niyama, pratyahara and dhyana (meditation) are helpful. Yama and niyama help to develop our moral values while pranayama, and meditation help us to realise our true self. Introspection is very effective for the development of 'self'.

Yamas and Niyama -

Yama and Niyama are principles which need to be adopted always in our day-to-day life. These can be considered as the universal codes of conduct that help us in following high standards in our personal and social life. Principles of yama are concerned with one's social life; while the principles of niyama are concerned with one's personal life. Yama and niyama are part of Ashtanga yoga

There are five yamas in yoga, which are ethical restraints and social codes that are the first step of the eight-limbed path to enlightenment:

1. Ahimsa: Non-violence or non-harming in thought, word, and deed. It's often considered the most important yama and the basis of all other practices.
2. Satya: Truthfulness, meaning to speak things as they are and to remember exactly as seen, heard, and imagined.
3. Asteya: Non-stealing.
4. Brahmacharya: Right use of energy, or moderation of the senses. It's often translated as "celibacy" but can also be seen as directing energy away from external desires and towards finding peace and happiness within ourselves.
5. Aparigraha: Non-greed or non-hoarding.

The five niyamas, or recommendations for healthy living, in yoga are:

1. Saucha: Purity or cleanliness of the body, mind, spirit, and surroundings
2. Santosha: Contentment and disinterest in acquiring more than one's needs
3. Tapas: Self-discipline, austerity, or "burning enthusiasm"
4. Svadhyaya: Self-study, self-reflection, and study of sacred scriptures
5. Ishvara pranidhana: Contemplation of or surrender to a higher power

The niyamas are the second limb of yoga, as described in Patanjali's Yoga Sutras. The prefix "ni" is a Sanskrit verb that means "inward" or "within"

Yogic Practices for Personality Developmen -

- Inner reflection: Yoga encourages people to sit quietly and tune out distractions, which can help them learn who they are and what they value
- Emotional stability: Yoga can help people control negative emotions and develop positive feelings.
- Mental clarity: Pranayama techniques like Nadi Shodhana and Kapalabhati can help improve concentration and mental equilibrium.
- Self-control: Yoga can help people develop self-control and grow morally.
- Attitude towards life: Yoga can change people's attitude towards life and make them more creative.
- Relationships: Yoga can enrich people's relationships with others.

Surya Namaskar-

Surya Namaskara (Sun Salutation) Surya means 'sun' and namaskara means 'salutation' or 'bowing down'. It consist of 12 postures. The regular practice of suryanamaskara helps improve blood circulation throughout the body and maintain health, and thereby helps one to remain disease-free. Postures practised during suryanamaskara act as a good link between warm-ups and asanas. Surya namaskara should preferably be done at the time of sunrise. It can be done any time on an empty stomach. However, morning is considered to be the best time for it. Adolescents should start doing suryanamaskara daily to have healthy body and mind.

Benefits:

It stimulates and balances all the systems of the body, including the endocrine, circulatory, respiratory and digestive systems. Its influence on the pineal gland and the hypothalamus helps to prevent pineal degeneration and calcification. This balances the transition period between childhood and adolescence in growing children.

Astanga yoga-

Ashtanga Yoga, which literally means "eight-limbed yoga", is a system outlined in the yoga sutras attributed to the ancient sage Patanjali. The yoga sutras are general guidelines for spiritual growth through right living, and are universal.

Benefits:

Relieves stress, improves coordination, and helpswith weight loss. Good for fit people looking to maintain strength and stamina, and those who want to get in touch with their spiritual side.

Meditation-

Meditation is apractice involving control of the mental functions. It starts from the initial with drawal of www the senses from external objects and culminates with a complete oblivion of the external environment. Meditation is agreat tranquilizer of the mind. One should prepare one self for Meditation adequately through Asanaand Pranayama, in the hierarchy of Yogic practices. Meditation occupies a higher position. The basic principle of Meditation is to develop internal awareness.

Benefits:

It lowers oxygen consumption.

- It decreases respiretoryrate.
- It increases blood flow and slows the heartrate.
- Leads to a deeper level of relaxation.
- Good for people with high blood pressure as it brings the B.P. to normal.

- Reduces anxiety attacks by lowering the levels of blood lactate.
- Decreases muscle tension (any pain due to tension) and head aches.
- Buildsself-confidence. www
- It increases serotonin production which influences mood and behaviour.Low levels of w
- serotonin are associated with depression, obesity, insomnia and headaches Also reduces activity of viruses and emotional distress.

Gifts of Yoga-

Yoga provides a strong foundation for the development of basic life-skills in every human being thereby leading to a total personality development of individuals, No matter what style of yoga you choose to do, you will likely see improvements in following areas of your health. Increases your flexibility

- Increase in muscle tone and strength
- Improves your circulatory and cardio health
- Helps you sleep bette
- Increases your energy levels
- Improves athletic performance
- Reduces injuries
- Detoxifies your organs
- Improves your posture
- Improves anxiety and depression
- Helps with chronic pain
- Releases endorphins that improve your mood Aids in weight loss
- Enhances productivity
- Slows the aging process
- Releases fear
- Increases the life energy
- Balances body and mind
- Increases positive attitude

CONCLUSION:

Regular practice of yoga promotes strength, endurance, flexibility and facilitates characteristics of friendliness, compassion, and greater self-control, while cultivating a sense of calmness and well-being. Sustained practice also leads to important outcomes such as changes in life perspective, self-awareness and an improved sense of energy to live life fully and with genuine enjoyment.

सोशल मीडिया का व्यक्तित्व विकास में योगदान

श्री रामपति रावत

सहायक प्राध्यापक - इतिहास
शासकीय महाविद्यालय ढोढर श्योपुर (म.प्र.)

संदर्भ -

कुछ दिन पूर्व संयुक्त राज्य अमेरिका में एक अफ्रीकी-अमेरिकी युवक की मृत्यु के बाद बड़े पैमाने पर हिंसक विरोध प्रदर्शन को दौर प्रारंभ हो गया। यह हिंसक विरोध प्रदर्शन स्वतः परंतु सोशल मीडिया द्वारा विनियोजित था। हमने पूर्व में अरब की सड़कों पर शुरू हुए प्रदर्शनों (जिसने कई तानाशाहों की सत्ता को चुनौती दी) में भी सोशल मीडिया के व्यापक प्रभाव का अनुभव किया है। सोशल मीडिया के माध्यम से लोग अपने विचारों को एक-दूसरे के साथ साझा कर एक नई बौद्धिक दुनिया का निर्माण कर रहे हैं।

वाक् एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता लोकतंत्र का एक अहम पहलू है। इस अधिकार के उपयोग के लिये सोशल मीडिया ने जो अवसर नागरिकों को दिये हैं, एक दशक पूर्व उनकी कल्पना भी किसी ने नहीं की होगी। दरअसल, इस मंच के ज़रिये समाज में बदलाव की बयार लाई जा सकती है। लेकिन, चिंता का विषय है कि मौजूदा वक्त में सोशल मीडिया अपनी आलोचनाओं के लिये चर्चा में रहता है। दरअसल, सोशल मीडिया की भूमिका सामाजिक समरसता को बिगाड़ने और सकारात्मक सोच की जगह समाज को बाँटने वाली सोच को बढ़ावा देने वाली हो गई है।

इस आलेख में सोशल मीडिया, उसके सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव, भारत में स्थिति, सोशल मीडिया व निजता के अधिकार में संतुलन और सोशल मीडिया के विनियमन पर विस्तृत चर्चा की जाएगी।

प्रस्तवना :-

सोशल मीडिया से जुड़कर, व्यक्ति अपनी भावनाओं, प्रतिक्रियाओं, और विचारों को व्यक्त कर सकता है. सोशल मीडिया से, युवाओं को विकास से जुड़ी जानकारी और कार्यक्रमों के बारे में पता चलता है. सोशल मीडिया से, युवा अपने खातों पर अपनी उपलब्धियां साझा कर सकते हैं और अपनी प्रतिभा दिखा सकते हैं. सोशल मीडिया से, युवाओं को किसी खास मुद्दे के बारे में जागरूकता मिलती है. सोशल मीडिया से, युवा अपने आपको एक अच्छा व्यक्ति बना सकते हैं.

सोशल मीडिया से, युवा अपनी अच्छाइयों और रचनात्मकता से रूबरू हो सकते हैं. सोशल मीडिया से, युवा सूचना के आदान-प्रदान कर सकते हैं और जनमत तैयार कर सकते हैं. सोशल मीडिया से, युवा विभिन्न क्षेत्रों और संस्कृतियों के लोगों से जुड़ सकते हैं और उन्हें भागीदार बना सकते हैं. सोशल मीडिया से, युवा नए तरीके से संपर्क कर सकते हैं.

हालांकि, सोशल मीडिया का इस्तेमाल करने का तरीका और इस्तेमाल की जाने वाली प्लेटफ़ॉर्म भी व्यक्तित्व को प्रभावित कर सकता है. उदाहरण के लिए, फेसबुक का इस्तेमाल कम संतुष्टि और आत्मसम्मान वाले लोगों को सामाजिक पूंजी बनाने में मदद कर सकता है.

सोशल मीडिया से तात्पर्य :-

- सामाजिक संजाल स्थल' (social networking sites) आज के इंटरनेट का एक अभिन्न अंग है जो दुनिया में एक अरब से अधिक लोगों द्वारा उपयोग किया जाता है। यह एक ऑनलाइन मंच है जो उपयोगकर्ता को एक सार्वजनिक प्रोफाइल बनाने एवं वेबसाइट पर अन्य उपयोगकर्ताओं के साथ सहभागिता करने की अनुमति देता है।
- प्रोफाइल का उपयोग अपने विचारों को साझा करने, पहचान के लोगों या अजनबियों से बात करने में किया जाता है। उदाहरण फेसबुक, ट्विटर आदि इस संपूर्ण प्रक्रिया में वेबसाइट पर उपलब्ध उपयोगकर्ता की निजी सूचनाएँ भी साझा हो जाती हैं।
- यह पूरी प्रक्रिया सूचना प्रौद्योगिकी पर आधारित होती है, जहाँ विभिन्न प्रकार के सॉफ्टवेयर का उपयोग किया जाता है। उपयोग के बहु-विविध तरीके और तकनीकी निर्भरता ने 'सामाजिक संजाल स्थल' को विभिन्न प्रकार के खतरों के प्रति सुभेद्य किया है।

सोशल मीडिया के सकारात्मक प्रभाव :-

- सोशल मीडिया दुनिया भर के लोगों से जुड़ने का एक महत्त्वपूर्ण साधन है और इसने विश्व में संचार को नया आयाम दिया है।
- सोशल मीडिया उन लोगों की आवाज़ बन सकता है जो समाज की मुख्य धारा से अलग हैं और जिनकी आवाज़ को दबाया जाता रहा है।
- वर्तमान में सोशल मीडिया कई व्यवसायियों के लिये व्यवसाय के एक अच्छे साधन के रूप में कार्य कर रहा है।
- सोशल मीडिया के साथ ही कई प्रकार के रोज़गार भी पैदा हुए हैं।

- वर्तमान में आम नागरिकों के बीच जागरूकता फैलाने के लिये सोशल मीडिया का प्रयोग काफी व्यापक स्तर पर किया जा रहा है।
- कई शोधों में सामने आया है कि दुनिया भर में अधिकांश लोग रोज़मर्रा की सूचनाएँ सोशल मीडिया के माध्यम से ही प्राप्त करते हैं।

सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभाव :-

- कई शोध बताते हैं कि यदि कोई सोशल मीडिया का आवश्यकता से अधिक प्रयोग किया जाए तो वह हमारे मस्तिष्क को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है और हमे डिप्रेशन की ओर ले जा सकता है।
- सोशल मीडिया साइबर बुलिंग को बढ़ावा देता है।
- यह फेक न्यूज और हेट स्पीच फैलाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- सोशल मीडिया पर गोपनीयता की कमी होती है और कई बार आपका निजी डेटा चोरी होने का खतरा रहता है।
- साइबर अपराधों जैसे हैकिंग और फिशिंग आदि का खतरा भी बढ़ जाता है।
- आजकल सोशल मीडिया के माध्यम से धोखाधड़ी का चलन भी काफी बढ़ गया है, ये लोग ऐसे सोशल मीडिया उपयोगकर्ता की तलाश करते हैं जिन्हें आसानी से फँसाया जा सकता है।
- सोशल मीडिया का अत्यधिक प्रयोग हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बड़े पैमाने पर प्रभावित कर सकता है।

सोशल मीडिया और भारत :-

- सोशल मीडिया ने समाज के अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति को भी समाज की मुख्य धारा से जडने और खलकर अपने विचारों को अभिव्यक्त करने का अवसर दिया है।
- आँकड़ों के अनुसार, वर्तमान में भारत में तकरीबन 350 मिलियन सोशल मीडिया यूज़र हैं और अनुमान के मुताबिक, वर्ष 2023 तक यह संख्या लगभग 447 मिलियन तक पहुँच जाएगी।
- वर्ष 2019 में जारी एक रिपोर्ट के मुताबिक, भारतीय उपयोगकर्ता औसतन 2.4 घंटे सोशल मीडिया पर बिताते हैं।
- इसी रिपोर्ट के मुताबिक फिलीपींस के उपयोगकर्ता सोशल मीडिया का सबसे अधिक (औसतन 4 घंटे) प्रयोग करते हैं, जबकि इस आधार पर जापान में सबसे कम (45 मिनट) सोशल मीडिया का प्रयोग होता है।
- इसके अतिरिक्त सोशल मीडिया अपनी आलोचनाओं के कारण भी चर्चा में रहता है। दरअसल, सोशल मीडिया की भूमिका सामाजिक समरसता को बिगाड़ने और सकारात्मक सोच की जगह समाज को बाँटने वाली सोच को बढ़ावा देने वाली हो गई है।
- भारत में नीति निर्माताओं के समक्ष सोशल मीडिया के दुरुपयोग को नियंत्रित करना एक बड़ी चुनौती बन चुकी है एवं लोगों द्वारा इस ओर गंभीरता से विचार भी किया जा रहा है।

सोशल मीडिया का दुरुपयोग :-

- आँकड़ों के अनुसार, वर्ष 2018-19 में फेसबुक, ट्विटर समेत कई साइटों पर 3,245 आपत्तिजनक सामग्रियों के मिलने की शिकायत की गई थी जिनमें से जून 2019 तक 2,662 सामग्रियाँ हटा दी गई थीं।
- उल्लेखनीय है कि इनमें ज़्यादातर वह सामग्री थी जो धार्मिक भावनाओं और राष्ट्रीय प्रतीकों के अपमान का निषेध करने वाले कानूनों का उल्लंघन कर रही थी। इस अल्पावधि में बड़ी संख्या में आपत्तिजनक सामग्री का पाया जाना यह दर्शाता है कि सोशल मीडिया का कितना ज़्यादा दुरुपयोग हो रहा है।
- दूसरी ओर सोशल मीडिया के ज़रिये ऐतिहासिक तथ्यों को भी तोड़-मरोड़ कर पेश किया जा रहा है। न केवल ऐतिहासिक घटनाओं को अलग रूप में पेश करने की कोशिश हो रही है बल्कि आज़ादी के सूत्रधार रहे नेताओं के बारे में भी गलत जानकारी बड़े स्तर पर साझा की जा रही है।
- विश्व आर्थिक मंच की रिपोर्ट के अनुसार, दुनिया में सोशल मीडिया के माध्यम से गलत सूचनाओं का प्रसार कुछ प्रमुख उभरते जोखिमों में से एक है।
- यकीनन यह न केवल देश की प्रगति में रुकावट है, बल्कि भविष्य में इसके खतरनाक परिणाम भी सामने आ सकते हैं। अतः आवश्यक है कि देश की सरकार को इस विषय पर गंभीरता से विचार करते हुए इसे पूरी तरह रोकने का प्रयास करना चाहिये।

व्यक्तित्व विकास में सोशल मीडिया प्रभाव :-

आज सोशल मीडिया प्रत्येक व्यक्ति की दिनचर्या का अंग बन गया है। व्यक्ति इससे जुड़कर अपनी प्रतिक्रिया, भाव व विचार व्यक्त कर सकते हैं। अतः सोशल मीडिया के द्वारा विकास से जुड़ी सूचनाओं और कार्यक्रमों की जानकारियां को युवाओं तक पहुंचाया जाना चाहिए, जिससे कि युवा अपना विकास बेहतर ढंग से कर सकें ।

सामाजिक बुद्धिमत्ता व्यक्ति को भविष्य के लिए बेहतर और अधिक सूचित निर्णय लेने में मदद करती है, जबकि भावनात्मक बुद्धिमत्ता व्यक्ति को वर्तमान स्थिति के लिए निर्णय लेने में सक्षम बनाती है। इसलिए, सामाजिक बुद्धिमत्ता और भावनात्मक बुद्धिमत्ता अलग-अलग अवधारणाएँ हैं और एक समान नहीं हैं।

अपने व्यक्तित्व विकास कौशल को मजबूत करें और इसके लिए स्वयंसेवा करें, जिससे आप किसी ऐसे उद्देश्य के लिए काम कर सकें जिसके लिए आप जुनूनी हैं। आप खुद की मदद करते हुए दूसरों की मदद करेंगे और इस प्रक्रिया में आपको अनुभव प्राप्त करने, नेटवर्क बनाने और अपने जैसे लोगों से मिलने का मौका मिल सकता है।

सोशल मीडिया और फेक न्यूज़ संबंधी नियम-कानून :-

- भारत में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पहले से ही सूचना प्रौद्योगिकी (IT) अधिनियम, 2008 के दायरे में आते हैं।
- यदि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म को अदालत या कानून प्रवर्तन संस्थाओं द्वारा किसी सामग्री को हटाने का आदेश दिया जाता है तो उन्हें अनिवार्य रूप से ऐसा करना होगा।
- सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर रिपोर्टिंग तंत्र भी मौजूद हैं, जो यह पता लगाने का प्रयास करते हैं कि क्या कोई सामग्री सामुदायिक दिशा-निर्देशों का उल्लंघन कर रही है या नहीं और यदि वह ऐसा करते हुए पाई जाती है तो उसे प्लेटफॉर्म से हटा दिया जाता है।
- भारत में फेक न्यूज़ को रोकने के लिये कोई विशेष कानून नहीं है। परंतु भारत में अनेक संस्थाएँ हैं जो इस संदर्भ में कार्य कर रही हैं-

- **प्रेस काउंसिल ऑफ इंडिया:** एक ऐसी ही नियामक संस्था है जो समाचार पत्र, समाचार एजेंसी और उनके संपादकों को उस स्थिति में चेतावनी दे सकती है यदि यह पाया जाता है कि उन्होंने पत्रकारिता के सिद्धांतों का उल्लंघन किया है।
- **न्यूज ब्रॉडकास्टर्स एसोसिएशन:** निजी टेलीविजन समाचार और करेंट अफेयर्स के प्रसारको का प्रतिनिधित्व करता है एवं उनके विरुद्ध शिकायतों की जाँच करता है।
- **ब्रॉडकास्टिंग कंटेंट कंप्लेंट काउंसिल:** टीवी ब्रॉडकास्टरों के खिलाफ आपत्तिजनक टीवी कंटेंट और फर्जी खबरों की शिकायत स्वीकार करती है और उनकी जाँच करती है।

निष्कर्ष :-

- पिछले वर्ष भारतीय पर्यटन एवं यात्रा प्रबंध संस्थान ग्वालियर के अध्ययन में बताया गया कि भारत आने वाले 89 फीसदी पर्यटक सोशल मीडिया के ज़रिये ही भारत के बारे में जानकारियाँ प्राप्त करते हैं। यहाँ तक कि इनमें से 18 फीसदी लोग तो भारत आने की योजना ही तब बनाते हैं जब सोशल मीडिया से प्राप्त सामग्री इनके मन में भारत की अच्छी तस्वीर पेश करती है।
- सोशल मीडिया ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार को नया आयाम दिया है, आज प्रत्येक व्यक्ति बिना किसी डर के सोशल मीडिया के माध्यम से अपने विचार रख सकता है और उसे हज़ारों लोगों तक पहुँचा सकता है, परंतु सोशल मीडिया के दुरुपयोग ने इसे एक खतरनाक उपकरण के रूप में भी स्थापित कर दिया है तथा इसके विनियमन की आवश्यकता लगातार महसूस की जा रही है। अतः आवश्यक है कि निजता के अधिकार का उल्लंघन किये बिना सोशल मीडिया के दुरुपयोग को रोकने के लिये सभी पक्षों के साथ विचार-विमर्श कर नए विकल्पों की खोज की जाए, ताकि भविष्य में इसके संभावित दुष्प्रभावों से बचा जा सके।

व्यक्तित्व विकास और नई शिक्षानीति (एनईपी) 2020 में इस की भूमिका

अजीत सिंह
वनस्पति विभाग,
शासकीय आदर्श कन्या महाविधालय,
श्योपुर (मध्य प्रदेश)

लोकेन्द्र सिंह जाट
वाणिज्य विभाग
पीएमसीओई शासकीय पीजी महाविधालय
श्योपुर (मध्य प्रदेश)

परिचय :-

नई शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली में एक परिवर्तनकारी बदलाव लाती है, जिसका उद्देश्य छात्रों में समग्र विकास को बढ़ावा देना है। इस सुधार का एक महत्वपूर्ण पहलू व्यक्तित्व विकास पर जोर देना है, विशेष रूप से स्नातक छात्रों के लिए। एनईपी 2020 का लक्ष्य अकादमिक शिक्षा के साथ-साथ छात्रों के व्यक्तित्व और चरित्र विकास को भी प्रोत्साहित करना है। इस पेपर में, हम संचार कौशल और नेतृत्व क्षमताओं को विकसित करने में एनईपी 2020 की भूमिका और इन प्रमुख क्षेत्रों को संस्थानों द्वारा लागू करने के तरीकों पर चर्चा करेंगे।

एनईपी 2020 के संदर्भ में व्यक्तित्व विकास का महत्वः व्यक्तित्व विकास का अर्थ है उन व्यक्तिगत गुणों, विशेषताओं और कौशलों का उन्नयन, जो किसी व्यक्ति को व्यक्तिगत और पेशेवर रूप से आगे बढ़ने में मदद करते हैं। एनईपी 2020 शिक्षा प्रणाली को पारंपरिक रटने वाले तरीकों से हटाकर अधिक इंटरैक्टिव, अनुभवात्मक और व्यापक बनाना चाहता है, जो व्यक्तित्व के प्रमुख तत्वों जैसेः संचार कौशलः विचारों, भावनाओं और विचारों को प्रभावी ढंग से व्यक्त करने की क्षमता।

नेतृत्वः- प्रेरित करने, मार्गदर्शन करने और टीमों या पहलों को प्रबंधित करने की क्षमता।

एनईपी 2020 इन सॉफ्ट स्किल्स को तेजी से बदलती और आपस में जुड़े हुए विश्व में व्यक्तिगत विकास और भविष्य की सफलता के लिए आवश्यक मानता है।

संचार कौशल :-

व्यक्तित्व विकास की आधारशिला प्रभावी संचार व्यक्तित्व विकास का एक प्रमुख आधार है। एनईपी 2020 के तहत, संस्थानों को अपने पाठ्यक्रम में संचार कौशल निर्माण को शामिल करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि छात्र न केवल अकादमिक रूप से उत्कृष्ट हों, बल्कि अपने विचारों को आत्मविश्वास से व्यक्त भी कर सकें।

अकादमिक और व्यावसायिक सफलता में संचार की भूमिकाः स्नातक शिक्षा के संदर्भ में, संचार कौशल ज्ञान और इसके अनुप्रयोग के बीच सेतु का काम करता है। छात्रों को यह सीखना चाहिए कि वे अपने विचारों को स्पष्ट रूप से कैसे प्रस्तुत करें, चाहे वह लेखन में हो या भाषण में, जो व्यक्तिगत और व्यावसायिक सफलता दोनों के लिए महत्वपूर्ण कौशल है। अध्ययन का मामलाः संचार कार्यशालाओं का एकीकरण संचार में सुधार के लिए संचार कार्यशालाओं का आयोजन एक प्रभावी तरीका है। उदाहरण के लिए, मध्य प्रदेश के एक सरकारी कॉलेज में छात्रों की सार्वजनिक बोलने, समूह चर्चा और प्रस्तुति कौशल को सुधारने के लिए साप्ताहिक कार्यशालाओं की शुरुआत की गई। इसके परिणामस्वरूप छात्रों की अकादमिक और पाठ्येतर गतिविधियों में अपने विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने की क्षमता में उल्लेखनीय सुधार हुआ, जो दर्शाता है कि संचार-केंद्रित हस्तक्षेप कैसे व्यक्तित्व विकास को आकार दे सकते हैं।

सक्रिय सुनने का महत्वः एनईपी 2020 संचार विकास के हिस्से के रूप में सक्रिय सुनने पर भी जोर देता है। सुनने को अक्सर व्यक्तित्व विकास में नजरअंदाज कर दिया जाता है, लेकिन यह दूसरों को समझने और रिश्तों को बनाने के लिए महत्वपूर्ण है। ऐसे वातावरण को बढ़ावा देकर जहां छात्रों को ध्यान से सुनने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, एनईपी का उद्देश्य अधिक सहानुभूतिपूर्ण और प्रभावी संचारकों का निर्माण करना है।

नेतृत्व विकास नेतृत्व व्यक्तित्व विकास का एक और महत्वपूर्ण तत्व है, जिस पर एनईपी 2020 जोर देता है। यह केवल औपचारिक पदों या खिताबों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें पहल करने, निर्णय लेने और सकारात्मक परिवर्तन को प्रेरित करने की क्षमता भी शामिल है।

कैंपस गतिविधियों के माध्यम से नेतृत्व को बढ़ावा देनाः एनईपी 2020 शैक्षणिक संस्थानों को नेतृत्व के लिए नर्सरी के रूप में देखता है। समूह परियोजनाओं, छात्र शासन और सामुदायिक सेवा में भागीदारी को प्रोत्साहित करने से स्नातक छात्रों में नेतृत्व गुणों का विकास होता है। छात्रों को निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल करके, कॉलेज उन्हें अपनी सीखने की यात्रा के लिए जिम्मेदारी लेने का अवसर देते हैं। अध्ययन का मामलाः छात्र नेतृत्व कार्यक्रम उदाहरण के लिए, महाराष्ट्र के एक कॉलेज ने एक छात्र-नेतृत्व वाली पहल विकसित की, जहां स्नातक छात्र कॉलेज उत्सव के लिए कार्यक्रमों के आयोजन और टीमों के प्रबंधन के लिए जिम्मेदार थे। इसने छात्रों को नेतृत्व, योजना और टीम वर्क में प्रत्यक्ष अनुभव दिया, जिससे उन्हें आत्मविश्वास हासिल करने और चुनौतियों का सामना करने में मदद मिली।

कक्षा से परे नेतृत्वः नेतृत्व का विकास अकादमिक तक सीमित नहीं है। एनईपी 2020 नेतृत्व क्षमता को बढ़ाने के लिए व्यावसायिक और पाठ्येतर गतिविधियों के एकीकरण का समर्थन करता है। ये गतिविधियाँ वास्तविक दुनिया के अनुभव प्रदान करती हैं जहां छात्र टीमों का नेतृत्व करने, निर्णय लेने और अपने साथियों के लिए उदाहरण स्थापित करने का अभ्यास कर सकते हैं। इस प्रकार, व्यक्तित्व विकास केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक समग्र प्रक्रिया है जहां छात्र विभिन्न संदर्भों में नेतृत्व के विभिन्न पहलुओं से जुड़कर विकसित होते हैं।

चरित्र विकास :-

व्यक्तित्व विकास चरित्र निर्माण के बिना अधूरा है। एनईपी 2020 उन व्यक्तियों को बनाने के महत्व पर जोर देता है जो न केवल कुशल हैं, बल्कि नैतिक और जिम्मेदार भी हैं। चरित्र विकास में ईमानदारी, सहानुभूति और धैर्य जैसे मूल्यों को प्रोत्साहित करना शामिल है।
नेतृत्व और संचार में नैतिकता: संचार और नेतृत्व, जैसा कि पहले चर्चा की गई थी, केवल तकनीकी कौशल नहीं हैं। इसमें एक नैतिक आयाम भी शामिल है, जिसमें ईमानदारी, पारदर्शिता और सहानुभूति शामिल हैं। एनईपी 2020 नैतिक शिक्षा और मूल्य-आधारित शिक्षा को कौशल विकास के साथ एकीकृत करने का आह्वान करता है, ताकि नैतिक नेता और संचारक तैयार किए जा सकें।

नेतृत्व और संचार में नैतिकता :-

संचार और नेतृत्व, जैसा कि पहले चर्चा की गई थी, केवल तकनीकी कौशल नहीं हैं। इसमें एक नैतिक आयाम भी शामिल है, जिसमें ईमानदारी, पारदर्शिता और सहानुभूति शामिल हैं। एनईपी 2020 नैतिक शिक्षा और मूल्य-आधारित शिक्षा को कौशल विकास के साथ एकीकृत करने का आह्वान करता है, ताकि नैतिक नेता और संचारक तैयार किए जा सकें।

धैर्य और भावनात्मक बुद्धिमत्ता का निर्माण :-

धैर्य, जो विपरीत परिस्थितियों से उबरने की क्षमता है, व्यक्तित्व विकास का एक और महत्वपूर्ण पहलू है। एनईपी 2020 ऐसे शैक्षणिक वातावरण को प्रोत्साहित करता है जो छात्रों को असफलता का सामना करने, तनाव को संभालने और मानसिक स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए सिखाते हैं। भावनात्मक बुद्धिमत्ता, जिसमें अपनी भावनाओं को समझना और प्रबंधित करना शामिल है, व्यक्तिगत विकास और सकारात्मक रिश्तों के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण है।

एनईपी 2020 का कार्यान्वयन : चुनौतियाँ और अवसर :-

हालांकि एनईपी 2020 स्नातक शिक्षा में व्यक्तित्व विकास को एकीकृत करने के लिए एक मजबूत ढांचा प्रदान करता है, लेकिन कार्यान्वयन की व्यावहारिक चुनौतियों को नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता है। संसाधनों, प्रशिक्षण और बुनियादी ढांचे की कमी इन लक्ष्यों की पूर्ण प्राप्ति में बाधा बन सकती है।

शिक्षक प्रशिक्षण और आदर्श :-

सबसे महत्वपूर्ण अवसरों में से एक शिक्षक प्रशिक्षण में निहित है। संकाय सदस्यों को न केवल अकादमिक रूप से बल्कि उनके व्यक्तित्व और चरित्र विकास में भी छात्रों का मार्गदर्शन करने के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। शिक्षक आदर्श के रूप में काम करते हैं, और उनका प्रभाव छात्रों के व्यक्तित्व को आकार देने में महत्वपूर्ण हो सकता है। अध्ययन का मामला: संकाय नेतृत्व वाले परामर्श कार्यक्रम दिल्ली विश्वविद्यालय में शुरू किया गया एक परामर्श कार्यक्रम छात्रों को संकाय परामर्शदाताओं के साथ जोड़ता है, जिन्होंने न केवल उन्हें अकादमिक रूप से बल्कि आत्मविश्वास, नेतृत्व और नैतिक निर्णय लेने में भी मार्गदर्शन दिया। इस तरह की पहल एनईपी के समग्र शिक्षा के दृष्टिकोण को लागू करने की कुंजी है।
अंत:विषय और समग्र शिक्षा: एनईपी 2020 अंत:विषय शिक्षा को प्रोत्साहित करता है, जहां व्यक्तित्व विकास किसी विशेष पाठ्यक्रम या विषय तक सीमित नहीं है, बल्कि इसे विभिन्न विषयों में एकीकृत किया जाता है। उदाहरण के लिए, एक विज्ञान के छात्र को सार्वजनिक बोलने, नेतृत्व या नैतिकता में पाठ्यक्रमों से लाभ हो सकता है। यह लचीलापन अच्छी तरह से संतुलित व्यक्तियों को आकार देने में महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष -

एनईपी 2020 का व्यक्तित्व विकास पर जोर भारत में शिक्षा को बदलने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। संचार कौशल, नेतृत्व विकास, और चरित्र निर्माण पर ध्यान केंद्रित करके, यह नीति ऐसे स्नातक तैयार करना चाहती है जो न केवल अकादमिक रूप से कुशल हों, बल्कि व्यक्तिगत और व्यावसायिक क्षेत्रों में सफल होने के लिए भी सुसज्जित हों। इस दृष्टिकोण को साकार करने के लिए संस्थानों, शिक्षकों और छात्रों को मिलकर काम करना होगा, जिसमें विशेष रूप से अनुभवात्मक शिक्षा, परामर्श और समग्र विकास पर जोर दिया जाएगा।

सन्दर्भ :-

1. भारद्वाज, एस. (2020). व्यक्तित्व विकास और शिक्षा में इसका महत्व. नई दिल्ली: शिक्षा प्रकाशन.
2. गुप्ता, आर. (2021). नेतृत्व कौशल: भारतीय संदर्भ में विकास और चुनौतियाँ. भारतीय शिक्षा जर्नल, 35(4), 145-160.
3. मिश्रा, ए., &वर्मा, डी. (2020). नई शिक्षा नीति 2020 का शिक्षण और सीखने पर प्रभाव. भारतीय उच्च शिक्षा समीक्षा, 22(2), 85-98.
4. शर्मा, पी. (2022). संचार कौशल और शैक्षणिक सफलता के बीच संबंध. शिक्षा और व्यक्तित्व विकास, 30(1), 101-115.
5. राजपूत, के. (2020). शिक्षा नीति 2020: समग्र शिक्षा और व्यक्तित्व विकास. नई दिल्ली: नेशनल पब्लिकेशन हाउस.

Personality Development and Its Role in the New Education Policy (NEP) 2020

VIKASH JAT
Department of Physics,
Govt. Adarsh Girls College
Sheopur (MP)

GUMAN SINGH
Department of Zoology,
PMCOE Govt. PG College
Sheopur (MP)

1.Introduction -

The New Education Policy (NEP) 2020 represents a significant shift in the Indian education landscape, aimed at promoting holistic student development. While academic excellence remains a core objective, personality development, particularly in areas such as communication skills and leadership, has become a central focus. This paper examines the role of personality development in NEP 2020, emphasizing communication and leadership skills for undergraduate students, and explores how educational institutions can implement these reforms to create more well-rounded graduates.

Personality development plays a pivotal role in the holistic growth of students, as emphasized by the New Education Policy (NEP) 2020. This policy aims to transform the educational landscape by fostering not only academic excellence but also the overall development of students personalities. NEP 2020 introduces a multidisciplinary approach, encouraging experiential leaming, critical thinking, and creativity. It emphasizes the importance of life skills education, which equips students with essential skills such as communication, problem- solving, and emotional intelligence[1]. Additionally, the policy promotes co-curricular activities, value education, and career guidance, ensuring that students develop into well-rounded individuals[2]. By focusing on inclusion and diversity, NEP 2020 aims to create an environment where every student can thrive, regardless of their background[3]. This comprehensive approach to education ensures that students are prepared to face the challenges of the modem world with confidence and resilience.

The Concept of Personality Development in NEP 2020:

Personality development, in the context of NEP 2020, refers to enhancing students' traits, behaviours, and skills necessary for their overall growth. This includes attributes like communication skills, the ability to express ideas and thoughts effectively, and leadership skills, which involve guiding teams and making decisions. These skills are considered essential to preparing students for both personal and professional success.

NEP 2020 moves beyond conventional leaming methods, pushing for an education system that incorporates these soft skills. This ensures that students can navigate real-world challenges more effectively by balancing knowledge with essential personality traits.

Communication Skills :

Communication is central to personality development. In today's interconnected world, the ability to communicate effectively is crucial for academic success, career advancement, and personal relationships. NEP 2020 highlights communication skills as one of the key areas where students need focused development

Importance of Communication in Academia and Career:

In undergraduate education, students are required to articulate their knowledge clearly and coherently. Whether it's in writing or verbal communication, the ability to present ideas effectively is crucial for academic performance and professional growth. Case Study: Communication Workshops At a govemment college in Madhya Pradesh, the introduction of communication workshops proved highly effective. These workshops, held weekly, focused on public speaking. presentations, and group discussions. After participating, students reported higher levels of confidence and greater clarity in expressing their thoughts, which translated into improved academic performance and better interactions in group activities.

The Role of Active Listening:

Communication isn't just about speaking; it's also about listening. NEP 2020 encourages active listening, which is essential for understanding others and building empathy. By cultivating environments where students actively listen, institutions can foster more meaningful dialogues, enhancing both personal and professional communication skills.

Leadership Development:

Leadership, a key aspect of personality development, is a major focus of NEP 2020. The policy advocates that leadership is not about holding formal positions but about taking initiative, making sound decisions, and influencing others positively. Under NEP 2020, educational institutions are encouraged to provide students with opportunities to develop leadership skills through experiential learning. Group projects, student governance, and extracurricular activities help students take responsibility and grow into leaders.

Character Development: The Ethical Foundation of NEP 2020

Character development is a fundamental aspect of personality development. NEP 2020 aims to produce graduates who are not only skilled but also ethical, empathetic, and socially responsible. This holistic approach ensures that students not only excel academically but also become good citizens. Effective communication and leadership require integrity and ethical behaviour. NEP 2020 emphasizes value-based education, where ethical principles are integrated into the curriculum. By instilling these values, institutions can develop individuals who lead with honesty and communicate with empathy.

Implementing NEP 2020: Challenges and Opportunities

Despite NEP 2020's ambitious vision for personality development, the implementation poses challenges. Many institutions may lack the resources, infrastructure, or trained faculty to effectively integrate personality development into their curriculum. One of the primary ways to implement NEP 2020's personality development focus is through teacher training. Faculty members must be equipped not only to teach academic subjects but also to mentor students in areas of personality development. Case Study: Faculty Mentorship Programs At a university in Delhi, a faculty mentorship program was initiated where teachers served as mentors, guiding students in areas like leadership, communication, and ethical decision-making. This program helped bridge the gap between academic knowledge and personality growth, offering students individualized attention and personal development.

Interdisciplinary Learning for Holistic Development:

NEP 2020 promotes interdisciplinary leaming, where students can take courses from various fields to enhance their overall personality. For instance, a science student can take courses in communication or ethics, ensuring that they graduate with a balanced skill set. This interdisciplinary approach is essential for holistic personality development.

Conclusion:

Personality development is a critical component of NEP 2020, aimed at creating well-rounded individuals who can thrive in both personal and professional domains. By emphasizing communication skills, leadership, and character development, NEP 2020 provides a pathway for educational institutions to shape future leaders. While challenges in implementation remain, with proper teacher training, mentorship programs, and a focus on holistic leaming, the vision of NEP 2020 can be realized. Educational reforms that integrate personality development will produce graduates who are not only academically capable but also equipped to handle the complexities of the modem world with integrity and resilience

References:

1. Bharucha, J. (2020). Personality development in the context of education reform. International Journal of Education and Development, 45(3), 112-125. https://doi.org/10.1016/j.ijedudev.2020.03.005

2. Chakrabarti, A., & Mishra, R. (2021). The impact of NEP 2020 on higher education: A focus on soft skills development. Journal of Indian Education, 47(1), 34-47. https://doi.org/10.1080/09751122.2021.112332
3. Ghosh, S. (2020). NEP 2020 and the emphasis on leadership skills in higher education. Higher Education Quarterly, 74(4), 567-581. https://doi.org/10.1111/hequ.2020.10462
4. Khanna, P. (2021). Communication skills and personality development: Preparing students for the 21st-century workplace. Journal of Educational Research and Practice, 12(2), 85-98. https://doi.org/10.28945/2021
5. Nanda, M., & Tiwari, P. (2021). Character building in education: Perspectives from NEP 2020. Education for Values in https://doi.org/10.1080/09735732.2021.10455 the 21st Century, 29(3), 118-132.
6. Patel, K., & Sinha, A. (2022). Leadership development in higher education: An analysis